चैत्र - बैसाख - ज्येष्ठ - आषाढ़ - श्रावण - भाद्रपद - अश्विन - कार्तिक - मार्गशीर्ष - पौष - माघ - फाल्गुन

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

मार्गशीर्ष-पौष, युगाब्द 5126,दिसम्बर 2024

धारा 370 अब इतिहास ही रहेगा

एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे

बंटेंगे तो कटेंगे

व्यक्ति निर्माण
संघ का मुख्य उद्देश्य

- संघ का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति निर्माण है, जो एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। शाखा में आने वाले हर समूह के कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण वर्ग आयोजित होता है।
- संघ ने समाज में पंच परिवर्तन की अवधारणा को लेकर कार्य करने का निर्णय लिया है जिसमें स्व आधारित जीवनशैली, सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण और नागरिक कर्तव्यों पर जोर दिया जाएगा।
- ड्रग्स के खिलाफ और स्वस्थ जीवन शैली के समर्थन में संघ का आग्रह है कि समाज में संस्कार, समरसता, शिक्षा और स्वास्थ्य पर जोर दिया जाए।
- ड्रग्स के प्रति आकर्षण युवाओं को कमजोर बना रहा है और इसे रोकने के लिए संस्कारों में सुधार जरूरी है। इंटरनेट प्लेटफार्म पर जो भी सामग्री दिखाई जा रही है उसमें से बहुत कुछ समाज के अनुकूल नहीं है।
- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता राष्ट्रहित में हो ताकि समाज में सकारात्मकता का प्रसार हो सके।
- बांग्लादेश के हिंदुओं को अपनी भूमि से पलायन करने की आवश्यकता नहीं है। वे वहीं डटे रहें। वह उनकी भूमि है। बांग्लादेश में हमारे शक्तिपीठ हैं। विश्व भर में रहने वाले हिंदुओं पर जब भी संकट आता है तो वह भारत की ओर देखते हैं। इसलिए उनके प्रति हमारा सहयोग बना रहना चाहिए।
- श्री कृष्ण जन्मभूमि का मामला न्यायालय में है। न्यायालय के निर्णय का सम्मान किया जाएगा।
- कई जगहों से धर्मांतरण के मामले आ रहे हैं। हिंदू समाज को अपनी रक्षा करने और संगठित होकर रहने की जरूरत है।
- हिंदू समाज यदि एकजुट नहीं रहेगा, तो आजकल की भाषा में बंटेंगे तो कटेंगे की बात कही जा सकती है। समाज की एकता में ही एकात्मता रहेगी। समाज में जाति-भाषा, अगड़ा-पिछड़ा का भेद करेंगे तो हम कटेंगे। इसलिए सभी में एकता जरूरी है। लोक कल्याण में हिंदू समाज की एकता है। इससे सभी को सुख मिलेगा। हिंदुओं को तोड़ने के लिए कई शक्तियां काम कर रही हैं।
- ओटीटी पर कानून उसी तरह से बनाया जाना चाहिए, जैसे फिल्मों के लिए सेंसर बोर्ड है।
- वक्फ बोर्ड संशोधन कानून पर सरकार विचार करेगी। देश की भावना के हिसाब से बनेगा नया कानून। 2013 तक वक्फ में कोई विशेष समस्या नहीं थी, लेकिन उसके बाद परिवर्तन करके उन्हें पूरा अधिकार दे दिया गया। उसमें डीएम भी कुछ नहीं कर सकता। इस बदलाव के बाद से समस्या है।
- देश के बहुत सारे मुस्लिम वक्फ पर सरकार के साथ हैं। यह किसी सरकार या एक पार्टी का विषय नहीं है, यह अन्याय का मामला है। देश की भावना के हिसाब से संशोधन करके नया कानून बनेगा।

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

मातृवन्दना

वर्ष: 32 अंक : 12 हिन्दी मासिक, शिमला (हिमाचल प्रदेश), मार्गशीर्ष-पौष, कलियुगाब्द 5126, दिसम्बर 2024

परामर्श
डॉ. किस्मत कुमार
श्री चन्द्र प्रकाश
श्री प्रताप समयाल
श्री मोतीलाल

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा
98050 36545

सह सम्पादक
डॉ. कर्म सिंह

सम्पादक मण्डल
मीनाक्षी सूद, डॉ. उमेश मौदगिल,
डॉ. जय कर्ण, डॉ. सपना चंदेल

आवरण व अक्षर संयोजन
राजेश शर्मा

वितरण प्रमुख
नरेन्द्र कुमार

प्रकाशक / मुद्रक
कमल सिंह सेन

कार्यालय
मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र. 171 004
दूरभाष : 0177 - 2836990
व्हाट्स ऐप : 76500 00990
ई-मेल : matrivandanashimla@gmail.com

मासिक शुल्क	₹25
वार्षिक शुल्क	₹150
आजीवन शुल्क	₹1500

वैधानिक सूचना :
पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा

इस अंक में...

संपादकीय	जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 की...	5
चिन्तन	भीतर से आता है आत्म सम्मान	6
प्रेरक प्रसंग	ज्ञान की संपूर्णता	7
आवरण	धारा 370 कश्मीर में इतिहास ही रहेगा..	8
महिला जगत्	संघर्ष से सफलता की कहानी...	12
संगठनम्	भारतीय किसान संघ की त्रिवार्षिक योजना	13
देवभूमि	माण्डव्य ऋषि की तपोभूमि ...	16
त्यौहार-मेले	तिब्बत की संधि से जुड़ा है लवी मेले...	18
धर्म जागरण	सनातन बोर्ड के गठन की मांग...	20
विमर्श	राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में आकर...	21
देश प्रदेश	विद्यार्थियों को पीएम विद्या लक्ष्मी...	23
पुण्य स्मरण	शिक्षा बचाओ आंदोलन के राष्ट्रीय संयोजक...	25
युवा पथ	हिमाचल की नेहा दीक्षित की आवाज...	27
घूमती कलम	शिमला में बनेगा दुनिया का दूसरा...	29
समसामयिकी	देवभूमि पर कब्जे की राक्षसी लालसा...	30
कृषि	जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक खेती	31
काव्य जगत्	बंटना नहीं कटना नहीं	32
स्वास्थ्य	ऋतु के अनुसार भोजन के नियम...	33
विश्व दर्शन	ट्रंप की ऐतिहासिक वापसी	34
बाल जगत्	वीर बाल दिवस...	35

अमृत वचन

मनुष्य जन्म लेता है, जीता है और मरता है,
इसलिए उसे अपना जीवन सही तरीके से जीना चाहिए।
---चंद्रशेखर वेंकटरमन

पाठकीय...

महोदय,

भारत की आजादी के लिए सदियों के संघर्ष में असंख्य राष्ट्र भक्तों ने बलिदान देकर शहादतें पाईं। आजादी के बाद कुछ लोग गुमनाम हो गए और कुछ राजनीति के सितारे बन गए। जो राजनीति में आए और जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में अपने योगदान का लाभ लेने की इच्छा जताई वे स्वतंत्रता सेनानियों की पेंशन प्राप्त करने के पत्र बन गए। उनकी अगली पीढ़ियां भी इसका लाभ लेकर उनके योगदान पर सभी लाभ प्राप्त कर रही हैं और यह होना भी चाहिए क्योंकि उनके पिता, दादा का राष्ट्र की आजादी के लिए योगदान जो रहा है। भले ही उन्होंने भीड़ का हिस्सा बनकर एक ही रात ही जेल में क्यों न बिताई हो। उन्होंने भी इसका फल चखा है।

दूसरी ओर कुछ ऐसे भी जनूनी लोग थे जिन्होंने अनेक कष्टों को सहन कर आजादी के लिए अपना योगदान तो दिया परंतु उसके बदले में न स्वतंत्रता सेनानी की पेंशन प्राप्त की और न कोई लाभ लिया। उन्होंने आजादी के आंदोलन को अपना एक कर्त्तव्य समझकर निभाया और देश आजाद होने पर अपने दूसरे काम में जुट गए।

यह जानकर दुख भी हुआ कि वजीर राम सिंह पठानिया जैसे महान सेनानायक के बारे में न किसी पाठ्यक्रम में पढ़ाया जा रहा है और न ही उनके योगदान पर कोई चर्चा होती है जबकि सरकारी तौर पर इस तरह के महान जांबाज स्वतंत्रता सेनानी महानायकों का पावन चरित्र पढ़ाया जाना चाहिए, ताकि नई पीढ़ी को महान नायकों के बारे में भी जानकारी प्राप्त हो सके जिनके बलिदानों से आज हम आजाद हैं। इस दृष्टि से मातृवंदना के संपादक मंडल को धन्यवाद दिया जाना चाहिए कि उन्होंने भारत के इन वीर पुरुषों के पावन जीवन चरित्र को समय-समय पर पाठकों तक पहुंचाने का काम किया है और आगे भी यह परंपरा बनी रहनी चाहिए।

पवना शर्मा शोधार्थी

हिंदी विभाग हैदराबाद विश्वविद्यालय

महोदय,

मातृवंदना पत्रिका में समय-समय पर मासिक अंकों के माध्यम से उपयोगी सामग्री पढ़ने को मिलती है। धर्म, संस्कृति, वर्तमान परिस्थितियों से संबंधित आलेख पत्रिका में शामिल रहते हैं। संक्षिप्त एवं सारगर्भित रचनाएं आकर्षित करती हैं। साज सज्जा भी अच्छी है। आवरण कथा के माध्यम से वर्तमान विषयों का विश्लेषण पढ़ने के योग्य रहता है। इस पत्रिका में बच्चों के योग्य सामग्री को पढ़ाए जाने की जरूरत है ताकि बच्चों को लिखने के लिए मंच मिल सके और उनमें लेखन की कला का विकास करने के लिए मातृवंदना भी एक माध्यम हो सके। राष्ट्रवाद पत्रिका की विशेषता है। वर्तमान में जहां पत्र पत्रिकाएं विज्ञापन के माध्यम से पैसा कमाने का एक एक सहज साधन बन गया हैं, जबकि मातृवंदना नि:स्वार्थ भाव से अच्छे विचार, राष्ट्र पर आधारित चिंतन पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास कर रही है, जिसकी सराहना की जानी चाहिए।

नेहा कुमारी नगरोटा बगवां जिला कांगड़ा

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

0177-2836990 **7650000990**

ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को श्री गीता जयंती एवं मोक्षदा एकादशी की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस दिसम्बर 2024

महर्षि अरविंद पुण्य स्मरण	5 दिसंबर
कपिल आचार्य जयंती	7 दिसंबर
मोक्षदा एकादशी	11 दिसम्बर
श्री गीता जयन्ती	11 दिसम्बर
स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस	13 दिसंबर
माता शारदा देवी जयंती	22 दिसंबर
क्रिसमस दिवस	25 दिसम्बर
सफला एकादशी	26 दिसम्बर

डॉ. दयानंद शर्मा
सम्पादक, मातृवन्दना

संपादकीय

जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 की वापसी संभव नहीं

कश्यप ऋषि की जन्मभूमि कश्मीर और साथ जुड़े जम्मू क्षेत्र में अनुच्छेद 370 और 35ए को केंद्र द्वारा निरस्त किए जाने के पश्चात् इस वर्ष यहां विधानसभा के चुनाव कराए गए। भारतीय संविधान और लोकतांत्रिक व्यवस्था पर विश्वास रखते हुए जम्मू कश्मीर की जनता ने चुनाव में बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपनी सरकार बनाई। चुनाव से पूर्व विगत चंद वर्षों में केंद्र सरकार द्वारा केंद्र शासित इस राज्य के विकास कार्यों को बड़ी तेजी से आगे बढ़ाया गया। विश्व का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज चनाब नदी पर बनाया गया। दिल्ली से श्रीनगर तक रेलवे लाइन लगभग बनकर तैयार हो चुकी है जिसका जनवरी 2025 में उद्घाटन होना संभावित है। 14 किलोमीटर लंबी जोजिला सुरंग बन रही है, जो कश्मीर के सोनमर्ग को लद्दाख के द्रास से जोड़ेगी। वर्ष 2026 तक इसके निर्माण कार्य को पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके बनने से 12 घंटों का सफर केवल 4 घंटों में सिमट जाएगा। यहां गांव से लेकर कस्बे-शहरों तक विकास कार्यों को गति दी जा रही है। धारा 370 की समाप्ति और चुनाव से पूर्व के अंतराल में जम्मू कश्मीर में शांति का माहौल बना रहा और पर्यटन के क्षेत्र में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। वर्ष 2024 में एक करोड़ 9 लाख पर्यटक श्रीनगर पहुंचे। जम्मू कश्मीर की जनता इस बात को हृदय से स्वीकार करती है कि धारा 370 की समाप्ति के पश्चात् यहां शांति का वातावरण बना है और विकास कार्यों को गति मिली है, किंतु अपना जनाधार बढ़ाने के लिए कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस के गठबंधन तथा अलगाववादी तत्वों ने जम्मू कश्मीर के लिए विशेष दर्जे अथवा 370 को बहाल करने की मांग को लेकर पुन: जनता को अपने बहकावे में लाकर अपनी जीत सुनिश्चित की।

अंतत: राज्य में अपने दल की सरकार बनाकर विधानसभा के प्रथम सत्र में ही राज्य के विशेष दर्जे अथवा अनुच्छेद 370 की बहाली का प्रस्ताव पारित कर दिया। वहां विधानसभा में विपक्ष में बैठी भारतीय जनता पार्टी ने इस प्रस्ताव का पुरजोर विरोध किया। भारत का अभिन्न अंग होते हुए भी अनुच्छेद 370 एवं 35ए के कारण जम्मू कश्मीर दो विधान, दो निशान से पृथक् अस्तित्व ग्रहण किए हुए था। वहां अलगाववाद की भावना इतनी प्रबल हो चुकी थी कि आम जनता भी अलगाववादी नेताओं के झांसे में आकर राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में संलिप्त होने लगी थी। पाकिस्तान की शह एवं सहायता से तथा सीमा पर आतंकवादियों की घुसपैठ से और आतंकवादी संगठनों द्वारा आतंकी घटनाओं को अंजाम देकर यहां भयावह स्थिति उत्पन्न कर दी गई। यहां के मूल निवासी पंडितों को राज्य से भगा दिया गया जो आज भी भारत के कई राज्यों में शरणार्थी बनकर जी रहे हैं। एक मजहब और एक खुदा का वास्ता देकर पाकिस्तान कश्मीर समस्या का राग अलपाता रहा है। भारत से बार-बार मुह-की खाने पर भी वह बाज नहीं आ रहा। आजादी मिलने के समय तथा उसके पश्चात् भारत सरकार के प्रथम शीर्ष नेतृत्व द्वारा की गई कई गलतियों का खामियाजा आज भी इस देश के बहुसंख्यक समाज को भुगतना पड़ रहा है। केंद्र में विपक्षी दलों के गठबंधन द्वारा लगातार अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण की नीति अपनाने से तथा सत्ता को येन-केन प्रकारेण हासिल करने की लालसा से धर्म, संप्रदाय, जाति तथा अन्य वर्गों में समाज को विभाजित किया जा रहा है और नफरत के बीज बोए जा रहे हैं। जहां अनुच्छेद 370 की बहाली का प्रश्न है यह बिल्कुल असंभव है।

राष्ट्रपति के पास अनुच्छेद 370 को निरस्त करने की एक तरफा शक्ति थी। तत्कालीन संसद की अनुशंसा पर उन्होंने जम्मू कश्मीर में भारत का पूर्ण संविधान लागू करने का निर्णय अपने अधिकार एवं शक्ति के अनुरूप किया है, उसे पुन: लागू करने की जम्मू कश्मीर विधानसभा के पास कोई संवैधानिक शक्ति नहीं, जबकि सर्वोच्च न्यायालय ने भी इसे वैध बताया है। बहुसंख्यक हिंदू समाज भी आज समझने लगा है कि जो मोदी और योगी कहते हैं कि एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे तथा नेक रहेंगे और बंटेंगे तो कटेंगे : नितान्त सही निर्देश है। महाराष्ट्र विधानसभा के चुनाव तथा उत्तर प्रदेश तथा अन्य प्रदेशों के उपचुनाव में आम जनता ने इस बात को समझा है। केंद्र सरकार ने विकास, सुशासन और समभाव को अधिमान दिया है। सभी भारतीयों के लिए समान रूप से विकास कार्यों को तरजीह दी है। यही कारण है कि चुनाव में मुसलमानों, दलितों, आदिवासियों तथा अन्य पिछड़े वर्गों का भी भारतीय जनता दल को वोट मिला है।

भीतर से आता है आत्म सम्मान

अहंकार का अन्य एक दोष है आत्मगौरव – – ''मैंने यह किया, मैंने वह किया; वह विचार सबसे पहले मेरे ही दिमाग में आया था।'' ईश्वर ही कर्त्ता है और हमारी सफलताओं का श्रेय सही मायने में केवल उसी को जाता है यह भूलकर जब अपनी योग्यता को या अपने द्वारा किये गये कार्यों को अति महत्त्व दिया जाता है तो झूठा अभिमान उत्पन्न होता है। ''घमण्ड का सिर नीचा'' वाली कहावत बिलकुल सत्य है। जैसे ही आपको घमण्ड हो जाता है, आप पतन की ओर अग्रसर होते हैं।

गुरुजी प्राय: एक कविता की पंक्तियों को उद्धृत करते थे ; 'Full many a flower is born to blush unseen/And waste its sweetness on the desert air.' सचमुच इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमें अपने कार्यों के लिये श्रेय मिलता है या नहीं। लोगों की मान्यता मिलने की चाहत आध्यात्मिक पथ पर एक गर्त के समान है। वह हमें झूठी प्रशंसा के पंखों पर बिठा कर उड़ा ले जा सकती है क्योंकि वह केवल अहंकार की तुष्टि करती है।

जो सही है उसे करने से ही आध्यात्मिक विकास होता है, उसके लिये श्रेय मिलने से नहीं। आप कह सकते हैं : 'ऐसा करने से तो कार्य करने के लिये कोई प्रेरणा ही नहीं रहेगी। मैं तो चाहता ही हूँ कि लोग मेरी प्रशंसा करें !' लेकिन ऐसी प्रशंसा जिसके वास्तव में कोई मायने हैं, अंतर से आती है जब हम अनुभव करते हैं कि हमें ईश्वर का समर्थन है।

अनेक लोग ऐसे हुए हैं जिन्हें विश्वख्याति प्राप्त हुई, पर फिर भी जिनका जीवन आत्महत्या से समाप्त हुआ। उन्हें जो प्रशंसा प्राप्त हुई वह उनके लिये खोखली सिद्ध हुई क्योंकि उससे अंतर में उन्हें तृप्ति नहीं मिली। परन्तु यदि अपने अन्तर में आपको यह एहसास हो कि आपने ईश्वर की कृपा प्राप्त कर ली है और ईश्वर की दृष्टि में आप प्रशंसनीय हैं तो आपका मन कभी विचलित नहीं होगा चाहे कितनी ही प्रशंसा या कितनी ही आलोचना की बौछार आप पर कर दी जाये।

आत्मसम्मान भीतर से उत्पन्न होता है, जबकि अहंकार पतन का मार्ग है। हमारी सफलताओं का श्रेय ईश्वर को जाता है, न कि हमें। घमंड से प्राप्त झूठी प्रशंसा क्षणिक होती है और आंतरिक संतोष नहीं देती। सच्ची तृप्ति तब मिलती है जब हमें यह अनुभव हो कि हमारा कार्य ईश्वर को प्रिय है। बाहरी प्रशंसा या आलोचना से प्रभावित होने के बजाय, हमें अपने कर्मों को ईश्वर को अर्पित करना चाहिए। सच्चा विनम्र व्यक्ति हर परिस्थिति में समभाव में स्थित रहता है। जैसे गुरुदेव कहते थे, 'मुझे ईश्वर को प्रसन्न करने में ही सच्ची खुशी मिलती है।'

जब भी कोई गुरुदेव की प्रशंसा करता तो उनके चेहरे पर एक प्यारी-सी, मधुर, विनम्र मुस्कान छा जाती थी। वे कुछ सीधे सरल शब्दों के साथ उस प्रशंसा को प्रभु के चरणों में समर्पित कर देते थे :

''मैं किसी से कोई अपेक्षा नहीं करता; परन्तु यदि किसी तरीके से मैं अपने भगवान को प्रसन्न कर सकता हूँ तो मुझे अत्यंत खुशी होती है।'' वे सच्चे अर्थ में विनम्र व्यक्ति थे, सदा एक समान, हर परिस्थिति में समभाव में स्थित। ◆◆◆

ज्ञान की संपूर्णता

दो मुसाफिर नदी के किनारे पहुंचे। उन्हें नदी पार जाना था। उन्होंने देखा कि तट पर एक नौका पड़ी है। एक बोला, ''नाविक तो नहीं है पर नौका पड़ी है। नदी पार कर लेंगे।'' दूसरा बोला, ''ऐसा नहीं हो सकता। नदी पार करने के लिए केवल नौका ही पर्याप्त नहीं है, नाविक भी चाहिए। पतवार की भी जरूरत है।' पहला बोला, 'यह कैसे हो सकता है।

हम हमेशा से सुनते आए हैं कि नदी पार करने के लिए सिर्फ एक नाव का होना काफी है । नौका पड़ी है फिर दूसरी चीजों की क्या आवश्यकता ? '! साथी के मना करने के बावजूद उसने नौका खोली। अकेला ही उसमें बैठा। एक हिलोर आई। नाव आगे चल पड़ी । पानी का बहाव तेज था। नौका डगमगाने लगी। कुछ दूर जाकर नौका उलट गई। यात्री पानी में डूब गया। जो व्यक्ति ज्ञान को संपूर्णता में ग्रहण नहीं करता उसके लिए तैराने वाली वस्तु भी डुबोने वाली बन जाती है।◆◆◆

तिलक की दृढ़ता

लोकमान्य उस समय लिखने में व्यस्त थे। जेलर ने कहा, 'आपका तार आया है।' लोकमान्य ने उसे पढ़ा और जेब में डालकर फिर लिखने में जुट गए, जैसे कुछ हुआ ही न हो। जेलर उनके चेहरेकी तरफ देखता रहा, फिर बोला, ''क्या आपने तार पढ़ लिया ?'' 'जी हां।' तिलक ने धीमे स्वर में कहा। 'पत्नी की मौत की खबर सुनकर आपको दु:ख नहीं हुआ ?' जेलर ने सहानुभूति दिखाते हुए कहा लोकमान्य ने बड़े शांत भाव से कहा, 'देश के लिए मैं इतने आंसू बहा चुका हूं कि अब मेरी आंखों से आंसू नहीं निकलते'! तिलक ने आगे कहा कि हाथ में लिया काम छोड़कर अगर मैं पत्नी के लिए शोक मनाने बैठ जाऊं तो उनकी आत्मा परेशान होगी । उनके जीवन भर के साथ ने मुझे यही सिखाया है। तिलक की यह बात सुनकर जेलर उन्हें देखता रह गया।◆◆◆

आदर्श घटना

राजा भोज स्वयं संस्कृत के विद्वान् थे और अन्य विद्वानों का भी खूब सम्मान करते थे। एक बार बाहर के विद्वान भी राजसभा में आमंत्रित थे। राजा भोज ने उनसे कहा कि वे अपने जीवन में घटित सच्ची व आदर्श घटना बारी- बारी से सुनाएं। सभी विद्वानों ने अपनी-अपनी आपबीती कह सुनाई। अंत में एक दीन-हीन सा दिखने वाला विद्वान् अपने आसन से उठा और बोला, 'मैं क्या बताऊं महाराज, मैं वास्तव में तो आपकी राजसभा में आने का अधिकारी ही नहीं था, किंतु मेरी पत्नी का आग्रह था, इसलिए चला आया। यात्रा का ध्यान रखकर उसने एक पोटली में मेरे लिए चार रोटियां बांध दीं । मार्ग में भूख लगने पर जब मैं खाने लगा, तभी एक कुतिया मेरे निकट आकर बैठ गई। स्पष्ट था कि वह भूखी थी। दया भाव से मैंने उसके सामने रोटी फेंक दी, जिसे वह कुतिया चट-पट खा गई। इस के बाद मैंने फिर से खाने के लिए रोटियों को छुआ। वह कुतिया फिर से रोटी की आशा में दुम हिलाने लगी, मुझे लगा कि वह मन-ही-मन कह रही है कि बाकी रोटियां भी दे दो। मैंने उसके सामने वे रोटियां भी डाल दीं। बस, महाराज यह है मेरे जीवन में हाल में घटित आदर्श घटना। खुद भूखा रह कर एक अन्य भूखे जीवन को मैंने तृप्त किया। यह सुखद अहसास मुझे कभी नहीं भूलेगा ।' राजा भोज इस वृत्तांत से भाव विभोर हो गए। विद्वान को उन्होंने अनेक मूल्यवान वस्तुएं भेंट स्वरूप दीं।◆◆◆

धारा 370

कश्मीर में इतिहास ही रहेगा

धारा 370 और 35-ए को दोबारा लागू करना नामुमकिन

डा. कर्म सिंह
सह संपादक मातृवन्दना

धारा 370 के माध्यम से कश्मीर में दो संविधान, दो निशान का प्रचलन रहा। इसी की छाया में अलगाववाद, आतंकवाद पनपता रहा। असंख्य सैनिकों और नागरिकों की हत्याएं हुईं। पाकिस्तान से आने वाले आतंकी कश्मीर में शादी करके संपत्ति के मालिक बन बैठे और भारत के नागरिकों को वहां जमीन खरीदने का अधिकार तक नहीं मिल पाया। इन्हीं पाकिस्तानियों के बलबूते कश्मीर में आतंक का साम्राज्य रहा और कश्मीरी पंडितों को जान बचाकर रातों-रात भागना पड़ा जो अभी तक पुनर्वास के लिए संघर्ष कर रहे हैं। वहां के दलितों का शोषण किया जाता रहा परंतु उन्हें संवैधानिक अधिकारों से वंचित रखा गया। सुरक्षा और सूचना के अतिरिक्त अन्य सभी नियम कानून जम्मू कश्मीर सरकार के अपने बनाए हुए चलाए जाते रहे। केवल भारत सरकार से पैसा ऐंठना और उसको मनमर्जी से खर्च करना, यह वहां की राजनीति का चेहरा रहा है।

वस्तुत जनसंघ के काल से ही धारा 370 को हटाए जाने की मांग होती चली आ रही थी, जिसे नरेंद्र मोदी की सरकार द्वारा पूरा किया गया और धारा 370 तथा 35 ए को हटाकर जम्मू कश्मीर और लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश बना दिया गया। फिर विकास के नए द्वार खुले। जन समर्थन मिला और राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय आलोचनाओं के बाबजूद जम्मू कश्मीर चंहुमुखी विकास के मार्ग पर तेज रफ्तार पकड़ने लगा।

लोकतंत्र की बहाली के लिए चुनाव हुए और उमर अब्दुल्ला ने मुख्यमंत्री बनते ही अपने वोट बैंक और अलगवावादी सोच को बनाए रखने के लिए धारा 370 को हटाने के लिए जम्मू कश्मीर की विधानसभा में प्रस्ताव भी पारित करा दिया, जबकि केंद्र सरकार में गृह मंत्री अमित शाह और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महाराष्ट्र के चुनाव के दौरान इसका डटकर विरोध करते हुए कहा कि धारा 370 तथा 35ए को अब दोबार लागू करना किसी भी पार्टी सरकार के लिए नामुमकिन है और अब यह इतिहास बन चुका है।

दरअसल विधानसभा चुनाव के बाद जम्मू-कश्मीर की नई उमर अब्दुल्ला सरकार ने विधानसभा में दो प्रस्ताव पारित किए। पहले प्रस्ताव में पूर्ण राज्य का दर्जा मांगा गया, जिस पर सभी पार्टियां सहमत थीं। दूसरे प्रस्ताव में अनुच्छेद 370 की वापसी की मांग की गई है। इस प्रस्ताव पर विधानसभा में लगातार हंगामा हो रहा है। अब्दुल्ला सरकार ने इसकी संवैधानिक स्थिति को जानते हुए यह प्रस्ताव पास क्यों कराया?

कश्मीर : जम्मू-कश्मीर विधानसभा में लगातार दूसरे दिन अनुच्छेद-370 को लेकर हंगामा हुआ। बीजेपी के विरोध के बीच जम्मू-कश्मीर के विधानसभा में 370 दोबारा लागू करने का प्रस्ताव पास हो गया। यह प्रस्ताव केंद्र शासित प्रदेश के डिप्टी सीएम सुरिंदर कुमार चौधरी ने रखा था। नेशनल कॉन्फ्रेंस ने यह बड़ी चालाकी से इस बिल के प्रस्तावक चुनने में संकेतों का इस्तेमाल किया। डिप्टी सीएम सुरिंदर चौधरी हिंदू हैं और जम्मू के नौशेरा से चुने गए हैं। दूसरे दिन विधायक खुर्शीद अहमद शेख अनुच्छेद 370 पर बैनर लेकर विधानसभा पहुंचे। इसके बाद विधानसभा में हाई वोल्टेज ड्रामा हुआ। हंगामे के कारण अब कई तरह के सवाल उठ रहे हैं। क्या 370 को दोबारा लागू किया जा सकता है? अगर नहीं तो केंद्रशासित प्रदेश की नई सरकार ने विधानसभा में प्रस्ताव क्यों पारित किया?

नहीं लौटेगा जम्मू-कश्मीर अनुच्छेद 370

बीजेपी का दावा है कि जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 अब इतिहास बन चुका है और इसे दोबारा लागू नहीं किया जा सकता है। यह दावा सही है। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के

केंद्र सरकार के फैसले पर सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों के बेंच की मुहर लग चुकी है। 11 दिसंबर 2023 को सुप्रीम कोर्ट ने अनुच्छेद 370 और 35ए को हटाने को वैध बताया था। कोर्ट ने अपने फैसले में कई तथ्यों का उल्लेख किया था, जिससे यह पता चलता है कि विधानसभा में प्रस्ताव पास करने के बाद भी केंद्रशासित प्रदेश को दोबारा लागू करने के लिए केंद्र सरकार और राष्ट्रपति की सहमति की जरूरत पड़ेगी। ऐसा अब राजनीतिक कारणों से संभव नहीं है, भले ही केंद्र में सरकार किसी की हो। जो पार्टी अब अपनी राजनीतिक शक्ति का उपयोग कर संसद और राष्ट्रपति के जरिये इसे लागू करने की कोशिश करेगी, उसे 80 फीसदी बहुसंख्यक हिंदू समुदाय का विरोध झेलना पड़ेगा।

दो संविधान और दो निशान के खात्मे पर लगी है सुप्रीम मुहर

जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 अक्टूबर 1949 में अस्तित्व में आया था, जिसके तहत उसे आंतरिक प्रशासन के लिए स्वायत्तता दी गई थी। जम्मू-कश्मीर की संविधान सभा में पारित प्रस्ताव के तहत उसे वित्त, रक्षा और संचार के अलावा कानून बनाने का अधिकार था। 5 अगस्त 2019 को केंद्र ने अनुच्छेद 370 को खत्म करने के लिए राष्ट्रपति के अधिकार का सहारा लिया था।

कोर्ट ने भी अपने फैसले में माना कि राष्ट्रपति के पास अनुच्छेद 370 में संशोधन करने की एकतरफ़ा शक्ति थी। चूंकि राष्ट्रपति ने भारत के पूरे संविधान को जम्मू-कश्मीर में लागू किया है, इसलिए जम्मू-कश्मीर का संविधान निष्क्रिय हो गया है। सुप्रीम मुहर लगने के बाद जम्मू-कश्मीर की संवैधानिक शक्ति का अस्तित्व ही समाप्त हो चुका है। कोर्ट ने जम्मू-कश्मीर की संप्रभुता के दावे को भी खारिज कर दिया था। इसके साथ ही दो निशान और दो संविधान भी खत्म हो चुके हैं।

वर्ष 2019 में बीजेपी सरकार के फैसले के बाद जम्मू-कश्मीर के क्षेत्रीय राजनीतिक दलों नेशनल कॉन्फ्रेंस, पीडीपी के साथ कांग्रेस और गैर बीजेपी दलों ने विरोध जताया था। कांग्रेस ने कोर्ट के फैसले पर भी असहमति जताई थी। कांग्रेस नेता पी. चिदंबरम ने कहा था कि जिस तरीके से अनुच्छेद 370 को निरस्त किया गया उससे हम असहमत हैं। इसके बाद कांग्रेस के कई नेताओं ने 370 हटाने का विरोध किया, मगर कभी यह वादा नहीं किया कि वह इसे दोबारा लागू करेगी। कांग्रेस के लिए 370 हटाने का विरोध बीजेपी के खिलाफ प्रतीकात्मक वैचारिक लड़ाई के अलावा कुछ नहीं है, इसलिए उसने जम्मू-कश्मीर के घोषणा पत्र में सिर्फ पूर्ण राज्य का दर्जा देने का वादा किया। कांग्रेस अपने अल्पसंख्यक वोटरों के लिए इसका विरोध करती रहेगी। नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीडीपी के लिए कश्मीर में अपने जनाधार बचाने के लिए राजनीतिक दांव ही है।

शाह ने जम्मू-कश्मीर विधानसभा में अनुच्छेद 370 की वापसी को लेकर हो रहे हंगामे का जिक्र किया। शरद पवार और कांग्रेस वाले अनुच्छेद 370 का समर्थन करते हैं। मैं इन लोगों को ये साफ कर देना चाहता हूं कि आपकी चार पुश्तें भी आएंगी, तो भी अब अनुच्छेद 370 वापस नहीं आएगा।

शाह ने कांग्रेस पर तुष्टीकरण करने का आरोप लगाते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी 75 वर्षों से अयोध्या में राममंदिर को लटकाती आ रही थी। राहुल गांधी अयोध्या नहीं गए, क्योंकि उन्हें वोट बैंक से डर लगता है। हम भाजपा वाले उस वोट बैंक से नहीं डरते हैं। हमने काशी विश्वनाथ कॉरिडोर भी बनवाया और सोमनाथ का मंदिर भी सोने का बन रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि अब कोई भी ताकत कश्मीर में अनुच्छेद 370 की वापसी नहीं करा सकती।◆◆◆

भारत तथा विश्व के विभिन्न देशों की राजनीतिक सामाजिक और सांस्कृतिक वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए महाराष्ट्र चुनाव के दौरान भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने एक नारा दिया- %एक रहेंगे तो नेक रहेंगे%। राजनीतिक आधार पर इस नारे पर विचार मंथन शुरू हुआ। मीडिया में खूब चर्चा हुई। जहां विपक्ष और साम्यवादी चिंताकों ने इसका विरोध किया, वहां राष्ट्रवादी और हिंदू हितों के संरक्षण में संलग्न लोगों ने इसका पूरा समर्थन किया।

वर्तमान में भारत की ज्ञान परंपरा, योग, आयुर्वेद और वैज्ञानिक चिंतन तथा लोक संस्कृति की जीवंत परंपराओं के आधार पर लोकप्रिय होती जा रही हैं और विश्व के अधिकांश लोग भारत की संस्कृति को जानने ,पहचानने तथा अपनाने के लिए उतावली हो रहे हैं। भारत की ज्ञान परंपरा को विश्व पटल पर संजीदगी और प्रामाणिकता के आधार पर प्रस्तुत किया जा रहा है। विभिन्न देशों में मंदिरों का निर्माण होना और हिंदू संस्कृति एवं रीति रिवाजों की ओर आकर्षण भारत की साख को मजबूत करने में कामयाब होता हुआ दिख रहा है। भारत के विरोधियों को आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक धरातल पर भारत की यह उन्नति खटकने लगी है। इसलिए भारत का विरोध करने के लिए कई तरह के षड्यंत्र भी रचे जा रहे हैं, जिसमें जॉर्ज सोरस के भारत में विद्यमान अनुयायियों के साथ-साथ चीनी माओवाद और पाकिस्तान का आतंकवाद भी सहयोग करता हुआ दिखता है। ऐसे में राजनीतिक आधार पर जहां सत्ता की आवश्यकता है, वहीं धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक तौर पर भी भारत को प्राचीन ज्ञान परंपरा के आधार पर प्रचारित किए जाने की आवश्यकता है, ताकि सनातन धर्म की विश्व बंधुत्व की उच्च भावनाओं को जन-जन तक पहुंचाया जा सके और भारत के अस्मिता को चोट पहुंचाने वाली ताकतों को भी परास्त किया जा सके। अत: 'एक रहेंगे तो नेक रहेंगे' अर्थात् अगर भारत के नागरिकों की एकता बनी रहेगी, सभी का राष्ट्र के विकास में योगदान मिलता रहेगा, तो भारत को एक विश्व शक्ति के रूप में स्थापित किया जा सकेगा।

इसके साथ ही एक रहने के लिए जातिवाद और मुफ्तखोरी के षड्यंत्र को भी नकारना होगा। यदि सामाजिक एकता खंडित होगी तो विकास की तीव्र गति को बनाए रखना कठिन होगा।

वर्तमान में भारत को आंतरिक और बाहरी दोनों तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। कुछ राष्ट्र विरोधी ताकतें विदेश से मिलकर पैसे के बल पर भारतीय समाज व्यवस्था और राजनीति को प्रभावित करने का प्रयास कर रही हैं इन षड्यंत्रकारियों का विरोध किया जाना अत्यंत आवश्यक है ताकि सब एक बने रहें। इसी एकता में राजनीतिक स्थिरता और देश के विकास के लिए सुदृढ़ इच्छा शक्ति के आधार पर नेक होने की बात सफल एवं सार्थक हो सकती है। एक होना और नेक नियति से रहना, यह देश के विकास के लिए आवश्यक है।

भारत का यह इतिहास रहा है कि जब भी एकता खंडित हुई नेक नियति में विकार आया। हमें पराधीनता का दुख भोगना पड़ा। जैसे ही भारतीय मनीषियों, स्वतंत्रता सेनानियों की एकता बनी, सभी जाति मत मजहब समुदायों के लोगों ने एक मत से विदेशी शक्तियों का मुकाबला किया, जीत हासिल हुई। तब भी कुछ भेडिए एकता को खंडित करने में कामयाब रहे । आज भी कुछ स्वार्थी तत्व भारत को उन्नति के रास्ते पर तेज गति से बढ़ते हुए रोकना चाहते हैं। इसलिए देश के नागरिकों का एक रहना जरूरी है। जाति ,मत ,मजहब के नाम पर बिखराव होने से शत्रुओं को अपना षड्यंत्र सफल बनाने में कामयाबी मिल सकती है। जब हम अधिकार और सुविधाएं हक से मांगते हैं तो कर्तव्यों के निर्वहन में भी शुद्धता एवं समर्पण का होना जरूरी है। अनेक अआंदोलनों के समय राष्ट्रीय संपत्ति को जलाते, नष्ट करते सामाजिक तत्वों से देश को बचाए रखने की जरूरत है। यह देश एकता के लिए बहुत बड़ा खतरा है। जिन्हें सभी सुख सुविधाएं भारत की अच्छी लगती हैं लेकिन गुणगान करने के लिए पाकिस्तान और चीन जैसी भारत विरोधी ताकतों का सहयोग करने से भी पीछे नहीं रहते, ऐसे में जो राष्ट्रवादी और सब प्राणियों का कल्याण चाहने वाली सोच रखते हैं, उनकी एकता जरूरी है। क्योंकि अगर वे सब एक रहेंगे, तभी नेक रहेंगे उनके हित सुरक्षित रहेंगे। देश की विभिन्न योजनाओं में उनका सहयोग भी सुनिश्चित हो सकेगा। यही राष्ट्रवादी ताकते भारत को विश्व गुरु बनाने के मार्ग पर पूरी मजबूती के साथ आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए यह चिंतन अत्यंत आवश्यक है कि 'एक रहेंगे तो नेक रहेंगे'।◆◆◆

व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व इन सभी का समग्र विकास सभी के कल्याण की भावना पर आधारित चिंतन से संभव है। यदि विचारधारा को बढ़ाने के लिए तलवार और बंदूक की जरूरत पड़ती है तो वह आक्रमणकारी शक्तियां कुछ वर्षों बाद परास्त होकर समाप्त हो जाती हैं। यदि कोई संस्कृति शाश्वत चिंतन को आधार मानकर विश्व के कल्याण की भावना से प्रेरित रहती है तो वह अनेकों परिवर्तनों के बाद भी समाज में विचार के रूप में जीवित रहती है। भारत की सनातन संस्कृति विश्व समुदाय में सौहार्द, समरसता, आत्मीयता और विश्व बंधुत्व के सिद्धांत पर आधारित है, जबकि अन्य मत मतांतर केवल अपनी सत्ता बनाए रखने तथा मारकाट करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। मानवता को समाप्त करने का कोई भी षड्यंत्र कुछ समय के लिए सफल हो सकता है परंतु वह हमेशा के लिए चिरंजीवी नहीं हो सकता। यही कारण है कि अनेकों उतार-चढ़ाव देखने के बाद भी विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक चुनौतियों का सामना करते हुए भारतीय सत्य सनातन धर्म एवं संस्कृति का मूल हमेशा एक समान बना रहा है। उसके आचरण में भली ही कुछ समय के लिए विकृति देखी गई हो परंतु मूल भावना में विश्व बंधुत्व और सभी प्राणियों के कल्याण की प्रार्थनाएं निहित रहती हैं। वर्तमान में राजनीतिक उठा पटक में वोट बैंक के लिए कुछ विपक्षी दल इस्लाम और ईसायत को पूरा संरक्षण प्रदान कर रहे हैं और भारतीय सनातन संस्कृति का विरोध करने के लिए तत्पर हैं। इस्लाम और ईसाइयत की सोच भारतीय संस्कृति से मेल नहीं रखती इसलिए इनमें विरोध होना स्वभाविक है।

हत्या, लूटपाट और स्वयं के मत को ही औरों पर थोपना तथा बंदूक और तलवार के बल पर अन्य धर्म को मानने वाले लोगों को जबरदस्ती अपने मत में मिलाने की कोशिश करना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं ठहराया जा सकता है। हिंदू जनों को जातिवाद के नाम पर बांटना, जातीय जनगणना करवाना, उनकी संपत्तियों को अन्यों को बांटने की सोच रखना, जहां हिंदू जाति को कमजोर करने का एक षड्यंत्र है, वहां यह देश को तोड़ने की भी एक गहरी साजिश है। इसी साजिश के तहत अब तक अखंड भारत के टुकड़े-टुकड़े करके अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश जैसे देश मजहब के नाम पर बनाए जा चुके हैं, जो आज एक मजहब को मानने वाले होने के बाद भी आपस में लड़ झगड़ रहे हैं और भारत को भी इस अलगाववादी सोच का शिकार बनाना चाहते हैं। जातिवाद इस्लाम में भी है। शिया और सुन्नी के कई तबके हैं। कई जातियां हैं। परंतु उनको एक मानकर हिंदुओं को जातियों में बांटकर कमजोर करने की राजनैतिक साजिश रची जा रही है। इसलिए योगी आदित्यनाथ द्वारा जो नारा दिया गया है बंटेंगे तो कटेंगे हिंदुओं की एकता की दृष्टि से भी सही है। क्योंकि जब-जब हिंदू बंटा तब-तब उसको कटना पड़ा है। आज भी वैसी स्थितियों का निर्माण किए जाने की कोशिश हो रही है। इन दिनों यह भी स्पष्ट देखा गया है कि जहां हिंदू आपस में बंटा, कमजोर हुआ, वहां से उसको कट्टरपंथियों के दर से पलायन करना पड़ा। इसलिए इस समस्या का समाधान तो होना ही चाहिए।

धर्म संस्कृति को बचाने के लिए राजनीतिक शक्ति भी जरूरी है। इसलिए उन ताकतों को मजबूत करने की जरूरत है , जो सनातन धर्म और संस्कृति को सम्मान एवं संरक्षण प्रदान करने का संकल्प धारण किए हुए हैं। यदि धर्मनिरपेक्षता के जाल में फंसकर हिंदुओं को छिन्न-भिन्न करते हुए इस्लाम और ईसाइयत को संरक्षण मिलता रहेगा तो ऐसे में भारत के और टुकड़े होने की संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता है। मुफ्तखोरी के चक्कर में काशी अयोध्या में बंटे तो हार हुई। भगवान राम की विरोधी शक्तियां सर उठाने लगीं और राजनैतिक तथा धार्मिक आधार पर हिंदुओं को हीन भावना का शिकार होना पड़ा। अन्य जिन प्रदेशों में बंटे वहां कटने के हालात पैदा होते जा रहे हैं। इसलिए राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न समुदायों को बांटने से बचना होगा ताकि विश्व स्तर पर भारत की साख और मजबूत हो तथा जिन राष्ट्रीय मुद्दों को तोड़ मरोड़ कर विश्व समुदाय के सामने राजनीतिक आधार पर पेश किया जा रहा है उनसे बचा जा सके भारत में विभिन्न मत मजहबों में आपसी सौहार्द बना रहे तथा जो निहित अपने निहित स्वार्थ के लिए सनातन संस्कृति का विरोध कर रहे हैं उन्हें मुंह तोड़ जवाब दिया जा सके इसके लिए पारस्परिक एकता का होना अत्यंत आवश्यक है। हिंदुओं को सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आधार पर आपस में जुड़े रहने की आवश्यकता है ताकि राजनैतिक षड्यंत्र के तहत हिंदुओं की आपसी एकता को किसी प्रकार का नुकसान न हो सके।◆◆◆

संघर्ष से सफलता की कहानी लिखने का नाम है

इल्मा अफ़रोज़

विदेश की नौकरी छोड़ देश में आईं फिर बनीं आईपीएस

भारतीय पुलिस सेवा (आइपीएस) 2018 बैच की अधिकारी यह वह नाम है जिसने साल 2018 में अपनी मेहनत से सभी को चौंका दिया था। उनकी कहानी न केवल कड़ी मेहनत और समर्पण का प्रमाण है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि कैसे संघर्ष और चुनौतियों से पार पाकर कोई भी सफलता हासिल कर सकता है।

हिमाचल प्रदेश कैडर की आइपीएस अफसर इल्मा बतौर बद्दी जनपद की पुलिस कप्तान होते हुए अचानक से छुट्टी पर आने के चलते सुर्खियों में है। मुरादाबाद के जिस कुंदरकी कस्बे से वह आती हैं, यहां वर्तमान में विधानसभा क्षेत्र उप चुनाव है। भाजपा प्रत्याशी रामवीर सिंह ने अपने फेसबुक अकाउंट पर इल्मा प्रकरण के सहारे कांग्रेस व सपा सरकार को घेरा है। लिखा कि सपा व कांग्रेस अपने स्वार्थ के लिए मुस्लिम समुदाय की भावनाओं से खिलवाड़ कर रही है। इधर, घर पर परिवार संग समय बिता रहीं इल्मा इन सब सुर्खियों से खुद को दूर रख रहीं हैं। बातचीत में हिमाचल प्रकरण से लेकर स्थानीय चुनाव में नेताओं द्वारा उनके नाम को मुद्दा बनाए जाने पर कुछ भी बोलने से इन्कार किया। इस बीच हर कोई अफसर बेटी की कहानी को जानना चाहता है। आइए जानते हैं अफसर बेटी इल्मा की कहानी =

देश सेवा के लिए छोड़ दी विदेश में नौकरी

दरअसल, कुंदरकी कस्बे में जन्मी इल्मा एक साधारण किसान परिवार से आती हैं। उनके पिता स्वर्गीय काज़ी अफ़रोज़ अहमद एक किसान थे। पिता के असमय निधन के बाद उनकी मां सुहैला अफ़रोज़ ने अकेले ही इल्मा और उनके छोटे भाई अरफ़ात अफ़रोज़ की परवरिश की।

सुहैला अफ़रोज़ एक साहसी और आत्मनिर्भर महिला हैं, जिन्होंने अपनी कठिन परिस्थितियों को बच्चों की प्रगति में बाधा बनने नहीं दिया। उन्होंने बच्चों को बचपन से ही कड़ी मेहनत और ईमानदारी का महत्व समझाया और देश की सेवा करने के लिए प्रेरित किया।

दिल्ली के सेंट स्टीफन्स कॉलेज से की ग्रेजुएशन

बच्चों में उसकी छाप दिखी। इल्मा अफ़रोज़ की शिक्षा देश और विदेश दोनों जगहों पर हुई। उन्होंने दिल्ली के प्रतिष्ठित सेंट स्टीफ़न्स कालेज से स्नातक की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद उन्होंने दुनिया के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय आक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी से उच्च शिक्षा प्राप्त की। आक्सफ़ोर्ड से पढ़ाई पूरी करने के बाद इल्मा ने संयुक्त राष्ट्र में कार्य अनुभव प्राप्त किया लेकिन, विदेश में एक शानदार करियर होने के बावजूद उनका दिल हमेशा अपने देश के लिए धड़कता रहा। देश सेवा के लिए ही विदेश में कार्य अनुभव और शिक्षा प्राप्त करने के बाद इल्मा ने भारत लौटकर सिविल सेवा परीक्षा 2017 पास की और आइपीएस अधिकारी बनीं। हिमाचल काडर के लिए चयन हुआ।

आपदाओं से निपटने में असाधारण प्रदर्शन

हिमाचल प्रदेश में तैनाती के दौरान उन्होंने राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (एसडीआरएफ) की कमान संभाली। उनके कुशल नेतृत्व में बल ने आपदाओं से निपटने में असाधारण प्रदर्शन किया। फिर बद्दी पुलिस जिले में बतौर एसपी, इल्मा कानून और व्यवस्था बनाए रखने के साथ-साथ समाज में बदलाव लाने की दिशा में भी काम किया।

450 बच्चों को शिक्षा की रोशनी देने का संकल्प

इंग्लैंड की प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी आफ यार्क के न्यूज़लेटर में उल्लेखित पुलिस अधीक्षक के रूप में अपनी व्यस्त दिनचर्या के बावजूद इल्मा अफ़रोज़ ने एक ऐसी पहल की, जो पूरे देश के लिए मिसाल बन गई। पुलिस ज़िला बद्दी में उन्होंने हर शाम अपने कार्यालय में 450 झुग्गी-बस्तियों के ब%चों को शिक्षित करने का जिम्मा उठाया। प्रतिदिन कार्यालय समय के बाद एसपी कार्यालय बद्दी में लगभग 450 बच्चों के लिए कक्षाएं आयोजित करतीं, जिनमें से कई बच्चे अनाथ या दिव्यांग हैं। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से इन वंचित बस्तियों के बच्चों को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी नागरिकों के रूप में ढालने का संकल्प लिया, ताकि ये बच्चे राष्ट्र की शक्ति बन सकें।◆◆◆

भारतीय किसान संघ हिमाचल प्रदेश

त्रिवार्षिक योजना

नई कार्यकारिणी का किया गठन

भारतीय किसान संघ का त्रिवार्षिक अधिवेशन 26 और 27 अक्टूबर 2024 को कुल्लू के गांव वाशिंग में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में प्रदेश के 11 जिलों से 179 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर केंद्रीय चुनाव पर्यवेक्षक के रूप में अखिल भारतीय महिला प्रमुख मंजू दीक्षित और क्षेत्रीय संगठन मंत्री सुरेंद्र जी उपस्थित रहे।

अधिवेशन के दौरान सत्र 2024 से 2027 तक के लिए नई कार्यकारिणी का चुनाव संपन्न हुआ, जिसमें सुरेश ठाकुर को प्रदेश अध्यक्ष और उमेश सूद को महामंत्री के रूप में सर्वसम्मति से चुना गया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की, जिसे भारतीय किसान संघ हिमाचल प्रदेश की आम सभा द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकृति मिली।

नई कार्यकारिणी में प्रमुख पदाधिकारी और सदस्य

प्रदेश अध्यक्ष : सुरेश ठाकुर, शिमला

प्रदेश उपाध्यक्ष: प्रेम शास्त्री (सोलन), डॉ. जयदेव शर्मा (कांगड़ा), रोशन चौधरी (कांगड़ा)

प्रदेश महामंत्री : उमेश सूद, कुल्लू

प्रदेश मंत्री : वैशाखी राम (सिरमौर), डॉ. नीलम ठाकुर (शिमला), नंद लाल शर्मा (मंडी)

प्रदेश संगठन मंत्री : हरि राम पवार

प्रदेश कोषाध्यक्ष : दिलबाग सिंह, ऊना

त्रिवार्षिक योजना का प्रारूप और भविष्य की कार्ययोजना : भारतीय किसान संघ की आगामी त्रिवार्षिक योजना के अंतर्गत किसान हित में संगठनात्मक, रचनात्मक और आंदोलनात्मक गतिविधियों का संचालन किया जाएगा। योजना के अनुसार विभिन्न आयामों के माध्यम से किसान हित में विभिन्न स्तरों पर कार्य किए जाएंगे।

प्रमुख कार्ययोजनाएं

गोपाष्टमी पर्व : नवंबर में गौपालन पर जनजागरण कार्यक्रम आयोजित कर किसानों को जैविक खेती और पंचगव्य आधारित कृषि के बारे में शिक्षित किया जाएगा।

खंड स्तर पर बैठकें : दिसंबर में खंड स्तर पर बैठकों का आयोजन कर संगठन की सक्रियता बढ़ाई जाएगी।

भारत माता पूजन : जनवरी में जिलों में भारत माता पूजन के माध्यम से जनजागरण अभियान चलाया जाएगा।

किसान विधि जागरूकता अभियान : किसानों को जमीन, खेती और राजस्व कानूनों की जानकारी देने हेतु कार्यक्रम आयोजित होंगे।

पर्यावरण संरक्षण : जुलाई में पौधरोपण और पर्यावरण संबंधी कार्यक्रम किए जाएंगे।

अधिवेशन के दौरान सुरेश ठाकुर ने बताया कि, 'किसान संगठन की सफलता का आधार कार्यकर्ताओं की निष्ठा और समर्पण है। आने वाले तीन वर्षों में भारतीय किसान संघ हिमाचल प्रदेश में किसानों के हित में यह कार्य योजनाएं लागू की जाएंगी।' इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश के किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से स्व-सहायता समूह और कृषि सहकारी संगठनों को भी जोड़ने की योजना बनाई गई। जैविक कृषि, विपणन, सहकारिता, और बीज संरक्षण जैसे क्षेत्रों में कार्यरत आयामों की भूमिका को अहमियत दी गई है।◆◆◆

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का 45वां प्रदेश अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का 45वां प्रदेश अधिवेशन 7-9 नवंबर को हमीरपुर के गौतम कॉलेज में भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में पूरे प्रदेश के छात्रनेताओं और विभिन्न कार्यकर्ताओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। अधिवेशन का उद्देश्य छात्रों में नेतृत्व क्षमता का विकास करना और संगठन के मूलभूत सिद्धांतों को आगे बढ़ाना था। इस दौरान हिमाचल प्रदेश की नई कार्यकारिणी की भी घोषणा की गई, जिसमें 150 से अधिक छात्र नेताओं को संगठन में विभिन्न जिम्मेदारियाँ सौंपी गईं।

प्रदेश अध्यक्ष और मंत्री का चयन

एबीवीपी अधिवेशन में सर्वसम्मति से राकेश शर्मा को प्रदेश अध्यक्ष के दायित्व पर चुने गए, जबकि कुमारी नैंसी अटल को प्रदेश मंत्री के दायित्व पर नियुक्त किया गया। दोनों ही छात्र नेताओं ने संगठन को और मजबूत बनाने तथा विद्यार्थियों के कल्याण के लिए प्रभावी कार्य करने का संकल्प लिया।

जिला सिरमौर की कुछ प्रमुख नियुक्तियाँ

जिला सिरमौर के मनीष बिरसांटा को पुन: एबीवीपी प्रदेश सह मंत्री के रूप में चुना गया। मनीष ने संगठन में अपनी सक्रिय भागीदारी और विद्यार्थियों के प्रति उनकी सेवा भावना के लिए एक मजबूत पहचान बनाई है। उनके पुनर्नियुक्ति से कार्यकर्ताओं में उत्साह की लहर है। इसके अतिरिक्त, शीतल शर्मा को राष्ट्रीय कला मंच की प्रदेश संयोजिका के रूप में नियुक्त किया गया। शीतल का योगदान कला के क्षेत्र में और युवाओं को सांस्कृतिक गतिविधियों से जोडने में विशेष रहा है। अभी ठाकुर को प्रदेश कार्यसमिति सदस्य के रूप में चुना गया है, जिन्होंने हमेशा संगठन के लिए समर्पण और लगन के साथ कार्य किया है।

जिला सिरमौर से जीनिया शर्मा, मनीष समटा और वीनू चौहान को प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य के रूप में चुना गया है। इन सभी छात्र-छात्राओं ने संगठन के लिए अनवरत रूप से कार्य करते हुए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, और यह नियुक्तियाँ उनकी निष्ठा का प्रमाण हैं। अधिवेशन में प्रमुख विषयों पर चर्चा

इस अधिवेशन में विभिन्न शैक्षिक और सामाजिक मुद्दों पर भी गहन चर्चा की गई। विद्यार्थियों के अधिकार, शिक्षा की गुणवत्ता, रोजगार के अवसर, और विभिन्न छात्र-हितैषी नीतियों पर सुझाव दिए गए। कार्यकारिणी सदस्यों ने विद्यार्थियों की समस्याओं को दूर करने और सकारात्मक दिशा में कार्य करने की प्रतिबद्धता जाहिर की।

अध्यक्ष का वक्तव्य

अध्यक्ष राकेश शर्मा ने कहा, 'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद युवाओं को सही दिशा में मार्गदर्शन देने के लिए प्रतिबद्ध है। हम शिक्षा के स्तर को बेहतर बनाने और विद्यार्थियों के हित में कार्य करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहेंगे।' उन्होंने नए पदाधिकारियों से भी अपील की कि वे संगठन के उद्देश्य और विचारधारा को मजबूती से आगे बढ़ाएं।

अधिवेशन का समापन

45वें प्रदेश अधिवेशन का समापन जोश और उत्साह के साथ हुआ, जिसमें नवनिर्वाचित कार्यकारिणी सदस्यों ने संगठन के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने और छात्र हितों की रक्षा करने का संकल्प लिया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद हिमाचल प्रदेश के इस अधिवेशन ने एकजुटता, साहस और नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत किया है, जो आने वाले समय में संगठन के कार्यों को एक नई दिशा देने में सहायक सिद्ध होगा।◆◆◆

मांगू में मातृवन्दना पत्रिका का पाठक मिलन कार्यक्रम

दाडलाघाट जिला के मांगू मण्डल में आज मातृवन्दना पत्रिका का पाठक मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें प्रांत प्रचार प्रमुख श्री प्रताप सामयाल जी की विशेष उपस्थिति रही। इस अवसर पर वरिष्ठ पाठक, मातृशक्ति और युवा पाठकों समेत कुल 35 लोग शामिल हुए। कार्यक्रम का उद्देश्य पत्रिका के माध्यम से राष्ट्रीय और सांस्कृतिक विचारों का प्रसार करना तथा पाठकों के बीच विचारों का आदान-प्रदान करना था।

हिमाचल के विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित गतिविधियां एवं कार्यक्रम

सेवा भारती जिला रामपुर ने वार्षिक रिपोर्ट में बताई गतिविधियां

सेवा भारती जिला रामपुर में मंगलवार को वार्षिक रिपोर्ट पेश की, जिसमें युवतियों को सिलाई कढ़ाई के प्रशिक्षण से लेकर समाज में किए गए उत्कृष्ट कार्यों का ब्यौरा रखा गया। वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए सेवा भारती के अध्यक्ष उमा दत्त भारद्वाज ने बताया कि वर्ष 2022-23 में 55 छात्राओं व महिलाओं ने प्रवेश प्राप्त किया। अप्रैल 2022 में 40 छात्राओं व महिलाओं ने सिलाई-कढ़ाई व बुनाई की परीक्षा उत्तीर्ण की, जिसमें 485 अंक प्राप्त कर शिवानी शर्मा प्रथम स्थान तथा 475 अंक प्राप्त कर सीमा ने दूसरा स्थान अर्जित किया। इसी तरह दैनिक उपस्थिति में राजकुमारी व अरूणा नेगी अव्वल रही, जिसने पूरे वर्ष में 254 दिनों में अपनी उपस्थिति दर्ज की तथा अनुशासन में सावित्री व रेखा प्रथम रही। कल्चर एक्टिविटी में संगीता टान्टा, पूजा, रजनी, संदीपना, अंजली, नेहा, अर्चना, रचना, भावना, कविता, सोनिका तथा सभी लड़कियों ने लवी मेला रामपुर व 26 जनवरी के कार्यक्रम में सेवा भारती का नाम रोशन किया। सेवा भारती अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर रही है, जिसमें स्वास्थ्य सुविधा, शिक्षा, दलित शोषित प्रताड़ित समाज के सभी वर्गों के महिला व पुरुषों को सहयोग करती है। सेवा भारती समरसता पर कार्य करती है। वर्ष 2022 में जिला बागासराहन (चन्नेईगाड़) में बादल फटने से लगभग 16 परिवारों के मकान क्षतिग्रस्त हुए उनकी सहायता हेतु सेवा भारती ने कंबल, वस्त्र, राशन व 30,000 रुपये की नकद राशि प्रदान की। दलाश के ओलवा गांव के एक व्यक्ति के घर जलने पर राशन, कंबल, बर्तन, तिरपाल व 5,000 रुपये की नकद राशि प्रदान की तथा दलाश में ही 25 गरीब व वृद्ध लोगों को एक-एक शॉल व 100-100 रुपये मकर संक्रांति पर वितरण किए गए तथा गानवीं के लबाना-सदाना में अग्नि पीड़ित परिवार को 11,000 रुपये नकद राशि प्रदान की गई।

सेवा भारती ने महात्मा गांधी परिसर खनेरी व आयुर्वेदिक चिकित्सालय रामपुर को 10-10 पीपी किट्स भेंट किए और 15 बीमार लोगों को ऑक्सीजन कंसटेटर देकर उपचार करवाया। गरीब बच्चों को शिक्षा हेतु 20,000 की शिक्षा सामग्री प्रदान की गई। इस वर्ष छात्रावास मंडी के लिए एक अनाथ लडके को कक्षा ग्यारहवीं के लिए निःशुल्क शिक्षा प्राप्ति के लिए भेज रहे हैं। एक महिला के पहाड़ी से गिरने पर 4000 की राशि सहायता हेतु प्रदान की गई।◆◆◆

पत्रकार सेवा प्रकल्प कार्यक्रम के तहत शिमला के पत्रकारों ने हिमगिरी कल्याण आश्रम द्वारा संचालित विवेकानंद छात्रावास मेहली समीप एपीजी यूनिवर्सिटी शिमला का दौरा किया।

सेवा भारती रामपुर द्वारा 5 नवम्बर 2024 को श्री ठाकुर सत्यनारायण मंदिर रामपुर में पत्रकार सेवा प्रकल्प दर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिस में दशकों से सेवा भारती द्वारा संचालित सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का प्रेस क्लब रामपुर के पत्रकारों ने दौरा किया।

माण्डव्य ऋषि की तपोभूमि, माण्डव्य नगरी 'मण्डी'

भाषासु संस्कृता भव्या आलयेषु हिमालयः।
राष्ट्रेषु भारतं राष्ट्रं प्रदेशेषु हिमाचलः।।

'संस्कृत सुधानिधि' -पारुल अरोड़ा

भाषाओं में संस्कृत भाषा, पर्वतों में हिमालय पर्वत, राष्ट्रों में भारत राष्ट्र तथा प्रदेशों में हिमाचल प्रदेश वरेण्य है।

इस अत्यन्त पवित्र देव भूमि हिमाचल में कभी ब्रह्म ऋषि वसिष्ठ, मनु, पराशर, वेदव्यास, भृगु, मार्कण्डेय, जमदग्नि आदि मनीषी ईश्वर की मनोहर स्तुति को प्रसन्नता से गाते हैं और कभी महर्षि लोमश, महर्षि माण्डव्य, शुकदेव मुनि भाव विभोर हो कर ईश्वर-गान करते हैं। भारतवर्ष की राष्ट्रीय एकात्मा के सूत्र, इसके इतिहास, भूगोल, धर्म, दर्शन और संस्कृति में सर्वत्र विपुल मात्रा में विद्यमान हैं। जिन नदी-तटों पर हमारे पूर्वजों ने ऐसा वाङ्मय रचा जो मानव सभ्यता का मानदण्ड बन गया, जिन पर्वतों की कन्दराएं ऋषियों की तपस्या से धन्य हुई जो झीलें-सरोवर, पाषाण शिलाएं, बावड़ीयां उनकी साधना के साक्षी बने उनके दर्शन और स्पर्श से तन-मन के पाप-ताप का शमन होता है। ऋषि मुनियों, साधु-सन्तों और विद्वान आचार्यों द्वारा दूर-दूर तक भ्रमण करके जगायी जाने वाली आध्यात्मिक चेतना और सम्पूर्ण देश में स्वीकृत समान जीवन-मूल्य ही तो इस देश को एक राष्ट्र के रूप में अमरत्व प्रदान करते हैं। हमारे पूर्वजों की महान् स्मृतियों के वाहक स्थलों का परिचय प्रत्येक भारतवासी से करवाते स्थानों में से एक, व्यास (विपाशा) नदी के तट पर अनादि काल से स्थित महाशिला पर प्राचीन काल में महाऋषि माण्डव्य ने तपस्या की थी। माण्डव्य ऋषि किसी समय वर्तमान मण्डी नगर पधारे तथा महाशिला पर तपस्या की। माण्डव्य ऋषि की कथाएं हमें यजुर्वेद, मत्स्य पुराण, ब्रह्मांड पुराण, महाभारत, पद्म पुराण, देवी भागवत, स्कंध पुराण इत्यादि ग्रंथों से प्राप्त होती है ।

यह महाशिला मण्डी नगर के भिऊली पुल के समीप व्यास (विपाशा) नदी की जलधारा के बीचों-बीच आज भी द्रष्टव्य है। व्यास नदी में आने वाली भीषण बाढ़ के प्रहार भी इस शिला को आज तक नहीं हिला सके हैं। यह माण्डव्य शिला सदैव मण्डी नगर के साथ माण्डव्य ऋषि के सम्बंधों को दर्शाती है और माण्डव्य से ही मण्डी के नाम की व्युत्पत्ति को सम्पुष्ट करती है। मण्डी का नाम माण्डव्य महाऋषि के नाम पर पड़ा यह एक प्रबल लोक धारणा भी है। ऋषि मुनि जहां जाते थे वहां आश्रम भी स्थापित करते थे। इन्ही आश्रमों में वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन अनुसंधान की परम्परा प्राचीन काल से चली आयी है। अनेकों ऋषियों ने इसके लिए जीवन खपाया। विद्युत शास्त्र, यंत्र विज्ञान , धातु विज्ञान, विमान विद्या, नौका शास्त्र, वस्त्र उद्योग, गणित शास्त्र, रसायन शास्त्र, वनस्पति विज्ञान, वाणी विज्ञान, लिपि विज्ञान, सैद्धांतिक विज्ञान, इत्यादि की खोज तथा अनुसंधान ऋषि मुनियों की देन है। महार्षि माण्डव्य आश्रम का भी उल्लेख महाभारत में मिलता है। माण्डव्य शिला को कोलसरा भी कहा जाता है। प्राचीन समय में कभी महाशिला के पास कमल कुंड था। महाभारत में महार्षि माण्डव्य को शूलीपर चढ़ाया जाना तथा धर्मराज को महाऋषि द्वारा शाप देना तथा धर्मराज का विदुर के रूप में मृत्यु लोक में जन्म लेना,पतिव्रत माहात्म्य, ब्रह्मा, विष्णु, शिव का अत्रि के यहां जन्म लेना महाऋषि माण्डव्य से सम्बंधित महत्त्वपूर्ण प्रसंग है। माण्डव्य ऋषि को अणिमाण्डव्य भी कहा गया है। धर्मराज को उलाहना देते हुए महाऋषि माण्डव्य ने एक बार पूछा कि उन्होंने अनजाने में ऐसा कौन सा पाप किया था कि उन्हें एक राजा द्वारा अज्ञानता वश अत्यंत कष्टदायिनी शूली पर चढ़ा दिया गया। किंतु वे शूली की नोकपर भी बैठ कर अध्यात्म बल से लम्बे समय तक तपस्या करते रहे। राजा को जब यह ज्ञात हुआ की उनसे बहुत बड़ी भूल हुई है तो तुरंत मुनि श्रेष्ठ को शूलीपर से उतारा किंतु शूली का अग्रभाग ऋषि के शरीर में ही रहा तब से महाऋषि माण्डव्य अणिमाण्डव्य नाम से विख्यात हुए। माण्डव्य ऋषि के प्रश्न पर धर्मराज ने महाऋषि माण्डव्य से कहा आपने बाल्य काल में फतिंगों के पृष्ठ भाग में सीकें घुसेड़ी थी। जिस प्रकार थोड़ा सा भी किया हुआ दान कई गुना फल देनेवाला होता है, वैसे ही अधर्म भी बहुत दुःख रूपी फल देनेवाला होता है। महाऋषि ने धर्मराज से प्रश्न किया जब यह घटना घटी तब उनकी आयु कितनी थी। धर्मराज ने कहा वे बाल्यावस्था में थे। अणिमाण्डव्य ने कहा धर्म शास्त्रों के अनुसार जन्म से लेकर बारह वर्ष की आयु तक बालक अज्ञानता वश कुछ भी करे उस में अधर्म नहीं है। माण्डव्य ऋषि ने धर्मराज को दण्ड देने के लिए श्राप दिया। तभी धर्मराज का जन्म पृथ्वी लोक में महाभारत काल में विदुर के रूप में हुआ था। विदुर धर्म-शास्त्र तथा अर्थ शास्त्र के

पण्डित थे। महाऋषि माण्डव्य ने धर्म के फल को प्रकट करनेवाली मर्यादा स्थापित की कि चौदह वर्ष की आयु तक किसी को पाप नहीं लगेगा। उससे अधिक की आयु पार करनेवालेंको ही दोष लगेगा। माण्डव्य ऋषि के स्थापित नियमों का वर्तमान की न्यायिक प्रणाली में भी अनुसरण होता है। उत्तर प्रदेश, राज्यस्थन, मध्यप्रदेश इत्यादि राज्यों के साथ नेपाल में भी महाऋषि माण्डव्य के स्थान, गुफाएं तथा मंदिर है। माण्डव्य ऋषि के मंदिर से सम्बंधित डाक टिकट नेपाल सरकार द्वारा प्रकाशित किया गया है। बंगाल वंश के राजाओं की प्रथम राजधानी भी माण्डव्य शिला के सामने व्यास नदी के पार भ्यूली क्षेत्र में रही जहां शक्ति का प्राचीन स्थान है। 1527 ई के आस-पास में बंगाल मूल के राजा अजबर सेन ने स्वयं-भू शिवलिंग पर बाबा भूतनाथ देवालय का निर्माण करवाया। उसीके बाद मण्डी ने एक बड़े नगर का रुप लेना प्रारंभ किया। तथा पहाड़ी राज्यों में एक शक्तिशाली राज्य का स्थान भी प्राप्त किया। बाबा भूतनाथ का यह स्वयंभू शिवलिंग मंदिर निर्माण से हजारों वर्ष पहले युगों-युगों से यहां विद्यमान है। जनश्रुतियां के अनुसार मण्डी सौ बार बसी और सौ बार ऊजड़ी है। एक अन्य लोककथा के अनुसार शिव-पार्वती विवाह का मंडप भी यही मंडी में सजा था। शिव -पार्वती विवाह के उपरान्त कैलाश पर्वत प्रस्थान करती बार शिवजी को संसार के कार्यों को चलायमान रखने के लिए पार्वती माता को मण्डी में छोड़ कर कुछ समय के लिए कही जाना पड़ा ।बहुत दिनों तक जब शिवजी नहीं लौटे तो माता पार्वती की पीड़ा देख यहीं मण्डप से एक ऋषि प्रकट हुए उन्होंने शिवजी का आवाहन किया। शिव जी ने उस ऋषि का नाम मण्डप रखा जो माण्डव्य नाम से प्रसिद्ध हुए। पाणिनिकालीन भारतवर्ष, पाणिनिकृत अष्टाध्यायी का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन है। इसमें दिए मानचित्र में मण्डी का नाम मंडमती बताया गया है। मंडी का नाम यहां आना ही मंडी के ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित करता है।

1701 ई में सिखों के दसवें गुरु गोविंद सिंह जी मण्डी के राजा सिद्ध सेन के समय यहां आए थे। तथा माण्डव्य शिला के आस-पास ही अपना अस्थाई शिविर स्थापित किया था। गुरु गोविंद सिंह जी का यहां ठहरना भी माण्डव्य शिला के पौराणिक महत्त्व का एक साक्ष्य है। मण्डी व्यापारिक केंद्र बनने से बहुत पहले से अध्यात्म का केंद्र रहा है। माण्डव्य ऋषि की तपोभूमि माण्डव्य नगरी जिसे वर्तमान में मंडी कहा जाता है से सम्बंधित एक संस्कृत में श्लोक बाबा भूतनाथ मंदिर परिसर में राधा-कृष्ण मंदिर के द्वार के ऊपर लिखा है 'महाराजाधिराजस्य माण्डब्य नगरीपते' मण्डी के प्राचीन देवालय तथा औषधिय जल वितरण करने वाली प्राचीन बावडिया तथा लोक साहित्य संकेत करता हैं की यह धरती देवी-देवताओं, ऋषि-मुनियों, पाण्डवों, साधु-संतों, नाथों, महात्माओं के त्याग और तप का ही फल है। छोटी काशी मंडी हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक राजधानी कहलाती है तथा प्रदेश का ह्रदय मानी जाता है।◆◆◆

युवाओं को नशे के दलदल में जाने से रोकेंगी पंचायतें, चिह्नित होंगे संदिग्ध

राजभवन में नशा उन्मूलन हेतु राज्यस्तरीय कार्यशाला हिमाचल प्रदेश में समुदाय के साथ घनिष्ठ संबंध बनाकर ग्राम पंचायतें संदिग्ध लोगों की पहचान कर उन्हें नशे की आदत लगने से पहले सहायता प्रदान करेंगी। नशे की आदत से मजबूर लोगों और उनके परिवारों को सहायता प्रदान करने में स्थानीय सहायता समूहों, पुनर्वास कार्यक्रमों और परामर्श केंद्रों की भी मदद ली जाएगी। राजभवन शिमला में नशा उन्मूलन को लेकर राज्यस्तरीय कार्यशाला में यह फैसला लिया गया। इस अवसर पर राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने कहा कि पंचायतीराज संस्थाओं के प्रतिनिधियों के सहयोग से नशे की बुराई का समूल नाश किया जाएगा। राज्यपाल ने कहा कि नशे की बुराई से निपटने में पंचायती राज संस्थाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं और जनप्रतिनिधि के तौर पर वे लोगों को मादक द्रव्यों के सेवन से होने वाले दुष्प्रभावों से जागरूक कर सकते हैं।

हिमाचल में जल्द लगेंगे सेमीकंडक्टर बनाने वाले उद्योग

हिमाचल में सेमीकंडक्टर बनाने वाले उद्योग स्थापित होंगे। इसके बाद उद्योग, आईटी और अन्य विभाग इसका रोडमैप तैयार करने में जुट गए हैं। कई कंपनियों ने हामी भरी है। सेमीकंडक्टर उद्योग लगने से हिमाचल में ही विद्युत धाराओं को नियंत्रित करने वाले कंप्यूटिंग चिप, माइक्रोकंट्रोलर, स्माल पैनल ड्राइवर आईसी और डिस्पले इंटीग्रेटेड सर्किट बनेंगे। इन्हें स्मार्ट फोन, कंप्यूटर, लैपटॉप और टेलीविजन में इस्तेमाल किया जाता है।

लवी मेला हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले के रामपुर बुशैहर में प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला एक प्रमुख ऐतिहासिक और व्यापारिक उत्सव है। समुद्र तल से 924 मीटर की ऊंचाई पर सतलुज नदी के किनारे बसा यह पर्वतीय स्थल हिमालय की समृद्ध परंपरा और संस्कृति का प्रतीक है। अंतरराष्ट्रीय लवी मेले का इतिहास 17वीं शताब्दी से जुड़ा हुआ है, जब बुशैहर रियासत के राजा केहर सिंह ने तिब्बत के साथ एक ऐतिहासिक व्यापारिक संधि की थी। यह मेला 11 नवंबर से 14 नवंबर तक आयोजित होता है और राज्य स्तरीय उत्सव के रूप में जाना जाता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

लवी मेला व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का उत्कृष्ट उदाहरण है। 1681 ईस्वी में, राजा केहर सिंह ने तिब्बत और लद्दाख के बीच चल रहे सीमा विवाद के दौरान तिब्बती जनरल गाल्दन त्सेवांग का समर्थन किया। इस सहयोग के परिणामस्वरूप दोनों पक्षों के बीच व्यापारिक संधि हुई, जिसमें कर मुक्त व्यापार की शर्तें तय की गईं। इस संधि को मजबूत करने के लिए घोड़ों और तलवारों का आदान-प्रदान हुआ। इसके बाद से दोनों क्षेत्रों के व्यापारी एक-दूसरे के देश में निर्बाध रूप से व्यापार करने लगे। यह मेला पहले सराहन और कामरू में आयोजित होता था, लेकिन बाद में इसे रामपुर बुशैहर में स्थानांतरित कर दिया गया।

मेले का आर्थिक और सामाजिक महत्व

लवी मेला हिमाचल प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों के लोगों के लिए आर्थिक संसाधन जुटाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यह मेला व्यापार का केंद्र है, जहां किन्नौर, लाहौल-स्पीति, कुल्लू और अन्य क्षेत्रों से व्यापारी अपनी वस्तुएं लेकर आते हैं। तिब्बत, लद्दाख और भारत के अन्य भागों के व्यापारी यहां ऊन, पशम, सूखे मेवे, घोड़े और अन्य वस्त्र लाते थे। बदले में वे रामपुर से नमक, गुड़ और अन्य आवश्यक वस्तुएं खरीदते थे। चामुर्थी घोड़ों का व्यापार लवी मेले का एक विशिष्ट पहलू रहा है। ये घोड़े उत्तराखंड से लाए जाते थे और इनकी उच्च गुणवत्ता के कारण प्रसिद्ध थे।

वर्तमान में मेले का स्वरूप

आज, लवी मेला आधुनिक और पारंपरिक दोनों स्वरूपों का संगम है। रामपुर के मेला ग्राउंड में आयोजित यह मेला स्थानीय और बाहरी व्यापारियों को एक समान मंच प्रदान करता है। किन्नौर और शिमला के भीतरी हिस्सों से व्यापारी अपने पारंपरिक सामान जैसे शॉल, पट्टू, मफलर, और टोपी लेकर आते हैं। किन्नौरी बदाम, चिलगोजा, शिलाजीत और अन्य हस्तनिर्मित वस्तुएं इस मेले का आकर्षण होती हैं। मेले में विभिन्न राज्यों से व्यापारी अपनी मशीन निर्मित वस्तुओं को बेचने आते हैं, जिससे यह मेला राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना चुका है।

हथकरघा और ग्रामीण दस्तकारी को बढ़ावा

लवी मेला ग्रामीण पारंपरिक हथकरघा व्यवसाय को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिमाचल के बुनकर और कारीगर मेले के दौरान अपने उत्पाद बेचते हैं, जिससे उन्हें आर्थिक स्थिरता मिलती है। ग्रामीण क्षेत्रों के दस्तकार अपनी हस्तनिर्मित वस्तुएं तैयार कर मेले में बेचते हैं। शॉल, पट्टू, नामदे, और खारचे जैसी वस्तुएं यहां उच्च मांग में होती हैं। यह मेला न केवल परंपरागत कला को बढ़ावा देता है, बल्कि नई पीढ़ी को भी रोजगार के अवसर प्रदान करता है।

लवी मेला हिमाचल प्रदेश का एक ऐसा उत्सव है जो राज्य की समृद्ध परंपरा, संस्कृति और आर्थिक गतिविधियों को सजीव बनाए हुए है। यह न केवल एक व्यापारिक मेला है, बल्कि जनजातीय और ग्रामीण लोगों की आजीविका का एक महत्वपूर्ण साधन भी है। हथकरघा व्यवसाय को बढ़ावा देने से लेकर स्थानीय और बाहरी व्यापारियों के बीच संपर्क का माध्यम बनने तक, लवी मेला अपनी ऐतिहासिक विरासत और आधुनिकता का अद्वितीय मेल है। इस मेले का आयोजन न केवल हिमाचल की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करता है, बल्कि इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान भी दिलाता है।

व्यापारिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान

लवी मेला केवल व्यापार तक सीमित नहीं है; यह विभिन्न संस्कृतियों के आदान-प्रदान का भी प्रतीक है। तिब्बत, चीन, और रूस से आने वाले व्यापारी पहले अपने अनूठे उत्पाद जैसे चाय, चांदी के कटोरे और खिलौने लाते थे। हालांकि, 19वीं शताब्दी में चीन द्वारा तिब्बत पर अधिकार के बाद यह व्यापार प्रभावित हुआ। वर्तमान में, यह मेला हिमाचल प्रदेश के साथ-साथ पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, और राजस्थान जैसे राज्यों के व्यापारियों को भी जोड़ता है।◆◆◆

समृद्ध संस्कृति और सामुदायिक एकता का प्रतीक है

रेणुकाजी मेला

मां रेणुकाजी के वात्सल्य एवं पुत्र की श्रद्धा का एक अनूठा आयोजन है यह मेला

श्री रेणुकाजी मेला हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले में हर साल कार्तिक शुक्ल पक्ष में आयोजित होने वाला एक ऐतिहासिक और धार्मिक महोत्सव है, जो हिमाचल की सांस्कृतिक धरोहर को उजागर करता है। यह मेला मुख्य रूप से देवी रेणुका और उनके पुत्र भगवान परशुराम की पौराणिक गाथा से जुड़ा हुआ है, और इसे देव-परंपराओं तथा धार्मिक आस्थाओं के अभूतपूर्व मिलन का प्रतीक माना जाता है।

पौराणिक पृष्ठभूमि

रेणुका जी का इतिहास महाभारत काल से जुड़ा हुआ माना जाता है। देवी रेणुका महान तपस्वी जमदग्नि ऋषि की पत्नी थीं और उनके पुत्र परशुराम को भगवान विष्णु का छठा अवतार माना जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, जमदग्नि ऋषि ने किसी कारणवश अपनी पत्नी रेणुका को मृत्युदंड देने का आदेश दिया। परशुराम ने अपने पिता के आदेश का पालन करते हुए अपनी माता का सिर काट दिया। लेकिन जब उनके पिता ने उनसे कोई वर मांगने को कहा, तो परशुराम ने अपनी माता को पुन-जीवित करने का वरदान मांगा। यह घटना माता-पुत्र के बीच के गहरे प्रेम और श्रद्धा को दर्शाती है और यही कथा इस मेले के आयोजन का आधार है। कहा जाता है कि इसके बाद रेणुका जी हिमालय की ओर चली गईं और वर्तमान समय में रेणुकाजी नामक स्थान पर जलसमाधि ले ली, जहाँ अब एक सुंदर झील और मंदिर स्थित है। यहाँ परशुराम और रेणुका जी के मिलन की स्मृति में हर साल इस मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें लोग दूर-दूर से आकर आस्था व्यक्त करते हैं।

मेले की विशेषताएं और आयोजन

रेणुका जी मेला एक सप्ताह तक चलता है और कार्तिक शुक्ल पक्ष की दशमी को आरंभ होता है। मेले की शुरुआत भगवान परशुराम की शोभायात्रा के साथ होती है, जिसमें उन्हें सिरमौर के विभिन्न गांवों से आए देवताओं के साथ रेणुका जी झील तक ले जाया जाता है। इस यात्रा में स्थानीय देवताओं की पालकियाँ शामिल होती हैं, जो हिमाचल प्रदेश की परंपरागत संस्कृति और धार्मिक आस्था का प्रतीक हैं।

मेले के दौरान झील के किनारे भक्तगण अपनी आस्थाओं को प्रकट करते हैं और झील में स्नान करना पवित्र माना जाता है। झील के निकट रेणुका जी और परशुराम के मंदिर स्थित हैं, जहाँ पूजा-अर्चना की जाती है। इस अवसर पर भक्तजन देवी रेणुका और भगवान परशुराम से सुख-समृद्धि और आशीर्वाद की कामना करते हैं।

मेले में धार्मिक आयोजनों के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होते हैं। स्थानीय लोकनृत्य, गीत, नाट्य और नाटकों का आयोजन भी किया जाता है, जिससे हिमाचली लोकसंस्कृति का परिचय मिलता है।

व्यापारिक गतिविधियां भी मेले का अहम हिस्सा

रेणुकाजी मेले में व्यापारिक गतिविधियाँ इस आयोजन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। मेले में स्थानीय हस्तशिल्प, हथकरघा उत्पाद, काष्ठ कला, ऊनी वस्त्र और पारंपरिक आभूषणों की दुकानें सजाई जाती हैं, जो पर्यटकों और श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र होती हैं। इसके अतिरिक्त, मेले में स्थानीय व्यंजनों की भी कई दुकानें लगती हैं, जहां लोग सिरमौर और हिमाचल प्रदेश के स्वादिष्ट पारंपरिक व्यंजनों का आनंद लेते हैं।

मेले का महत्व

रेणुका जी मेला न केवल एक धार्मिक आयोजन है, बल्कि यह स्थानीय समाज और संस्कृति को एकजुट करने का भी माध्यम है। यह मेला हिमाचल प्रदेश की समृद्ध देव-परंपरा और सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से न केवल हिमाचल की पुरानी परंपराएं जीवित रहती हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी अपनी संस्कृति से जोडने का अवसर मिलता है। रेणुका जी मेला न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से बल्कि पर्यटन के लिहाज से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अत: रेणुकाजी मेला सिरमौर के धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है, जो आस्था, प्रेम, परंपरा और सामुदायिक एकता का प्रतीक है। यह मेला हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत को संजोए रखने में विशेष योगदान देता है और इसे राष्ट्रीय पहचान भी प्रदान करता है।◆◆◆

सनातन बोर्ड के गठन की मांग

सनातन धर्म संसद में संत देवकी नंदन बोले सनातनियों के लिये जल्द बने सनातन बोर्ड

सनातन न्यास फाउंडेशन के तत्त्वाधान में जगदगुरु शंकराचार्य की अध्यक्षता में आयोजित हुई 'सनातन धर्म संसद' में संत-धर्माचार्यों ने सनातनी हितों की रक्षा के लिये एक मत से 'सनातन बोर्ड' के गठन की आवश्यकता बतायी। धर्म संसद में वक्फ बोर्ड के असंवैधानिक अधिकार, प्रसाद मे मिलावट सहित, लव जिहाद, मुंबई चुनावों में मुस्लिम आरक्षण की माँग पर भी वक्ताओं ने अपनी बात रखी । सनातन बोर्ड में शामिल होने वाले विषयों पर पर मंथन हुआ। वहीं अगली धर्म संसद प्रयाग कुम्भ में करने की घोषणा की गयी। यह सनातन धर्म संसद मथुरा के देवकी नंदन महाराज ने दिल्ली में आयोजित की थी।

दिल्ली के यमुना खादर करतापुर चौथा पुस्ता के समीप आयोजित सनातन धर्म संसद में सनातनी संतों को सुनने के लिए बड़ी संख्या में लोग पहुँचे। दिल्ली के बाहर प्रदेशों से आये साधु-संतों के साथ हजारों युवाओं ने सनातनी एकता के लिये हुंकार भरी । जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी सदानंद सरस्वती महाराज के साथ देश के प्रमुख संत-कथाकारों के मंच से दिये गये हर वक्तव्य पर जय श्रीराम और राधे-राधे के जयकारे गूंजते रहे । धर्म संसद में कुम्भ में गैर हिंदुओं की दुकान न लगाने के प्रस्ताव का समर्थन किया गया । शंकराचार्य सदानंद सरस्वती ने कहा कि जिनके धर्म-शास्त्रों में भारत का नाम लिखा है, वही भारत के असली निवासी हैं । सनातन हितों के लिये सनातन बोर्ड समय की आवश्यकता है। यह सरकार और समय सनातनियों के अनुकूल है। उन्होंने कहा कि देश के प्रत्येक जिले से लोगों को सनातन बोर्ड के लिये सभा कर आवाज उठानी चाहिये । उन्होंने कहा कि जो हिंदुत्व को मानता है वहीं हिंदु है । हिंदू से हिंदुत्व अलग नहीं हो सकता।

सनातन बोर्ड पर अखाड़ा परिषद का समर्थन देते हुये जूना अखाड़ा के अध्यक्ष महंत नारायण गिरी महाराज ने कहा कि खाद्य पदार्थों को अपवित्र करने वाले लोगों को सनातनी कुम्भ से दूर रहना चाहिये । जब काबा में कोई हिंदु नहीं जा सकता तब हिंदू धर्मस्थलों पर भी प्रवेश निषेध होना चाहिये । शिव कथा प्रवक्ता प्रदीप मिश्रा ने धर्म और बहन-बेटियों की सुरक्षा का मुद्दा उठाते हुये युवाओं को शस्त्र चलाने की शिक्षा लेने की बात कही।

शिव कथा प्रवक्ता प्रदीप मिश्रा ने धर्म और बहन-बेटियों की सुरक्षा का मुद्दा उठाते हुये युवाओं को शस्त्र चलाने की शिक्षा लेने की बात कही

सनातन धर्म संसद के संयोजक एवं सनातन न्यासफाउंडेशन के अध्यक्ष देवकी नंदन महाराज ने कहा कि सविंधान का अपमान करके वक्फ बोर्ड बनाया गया। या तो वक्फ बोर्ड मिटा कर रहेंगे अथवा सनातन बोर्ड बनवा कर रहेंगे। देवकीनंदन इस समय भारतवर्ष के अनेक स्थानों पर हिंदू धर्म जागरण तथा एकता बनाए रखने के लिए धर्म जागरण का शंखनाद करते हुए पदयात्राएं कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि शंकराचार्य महाराज के संरक्षण में देश में केन्द्रीय 'सनातन बोर्ड' गठित किया जायेगा । इसका प्रारूप तैयार किया गया है । इसमें सनातनी मंदिरों को सरकार के नियंत्रण से मुक्त करवा कर वैदिक परम्परा अनुसार मंदिरों की व्यवस्था बनायी जायेगी । मंदिरों की संपत्ति एवं भूमि के नियमन, तथा मंदिरों की आय से गुरूकुल स्थापित किये जायेगें। सनातन बोर्ड द्वारा गौ को राष्ट्रीय माता घोषित कर उसके संवर्धन एवं गौ पालन को बढ़ावा दिया जायेगा । वहीं जरूरतमंद निर्धन सनातनियों का सहयोग और सुरक्षा प्रदान कर उन्हें धर्म परिवर्तन के साजिश से बचाया जायेगा । देवकी नंदन महाराज ने कहा कि संत समाज एवं कानूनविदों से सुझाव लिये जा रहे हैं । सभी के सहयोग से प्रयागराज कुम्भ में सनातन बोर्ड के प्रारूप को अंतिम रूप देकर सरकार को अग्रसरित किया जायेगा ।

परमार्थ निकेतन के चिदानंद मुनि ने कहा कि सनातन की लाईन में सभी शामिल हो सकते हैं। सनातन समानता और न्याय की बात करता है। वक्फ बोर्ड की दूसरों की संपत्ति हड़पने की नीति रोकने को सनातन बोर्ड का बनना जरूरी है। अयोध्या से आये राम विलास वेदांती महाराज ने कहा कि राम मंदिर की तरह मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर भी बनेगा । कहा कि सनातन बोर्ड के लिये भी आन्दोलन की जरूरत है। हैदराबाद से आये सांसद टी राजा ने मुगल सोच के लोगों से सनातन को खतरा बताते हुये उन्ही की भाषा में जवाब देने की जरूरत बतायी । वृंदावन से आये बिराग संत गोविन्दानंद तीर्थ महाराज ने कहा कि अगर अभी भी सनातनियों के लिये आवाज नहीं उठायी गयी तो फिर सनातनी संस्कृति को दूषित करने वाले लोगों के हौसले और बढ़ जायेंगे। सुतीक्ष्ण दास देवाचार्य ने कहा कि खाद्य पदार्थों, फल, भोजन आदि में थूक या मूत्र मिलाकर अपवित्र करने वाले लोगों के लिये कठोर कानून बनाकर दण्डित किया जाना चाहिये।◆◆◆

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में आकर क्या मिलेगा?

-अमरजीत

एक आम प्रश्न जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं से पूछा जाता है वह यह है कि संघ में आकर क्या मिलेगा? और कई बार स्वयंसेवक से निजी तौर पर भी पूछा जाता है कि आपको संघ से क्या मिला ? उक्त प्रश्न के उत्तर में सबसे प्रमाणिक उत्तर संघ के वर्तमान सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी का ही मानना पड़ेगा। इस प्रश्न के विषय में वे कहते हैं, 'संघ में आने से हमको क्या मिलेगा? जब मैं होता हूँ सामने तो मैं साफ़-साफ़ बताता हूँ कि संघ में आने से आपको कुछ नही मिलेगा, जो आपके पास है थोडा बहुत वह भी चला जाएगा। मान लीजिये लौकिक जीवन की बर्बादी भी हो सकती है'। 'हिम्मत है तो आओ', 'कबीरा खड़ा बाजार में, लिए लुकाठी हाथ, जो घर फूंके आपनौ, चले हमारे साथ'। इस बात का सीधा सा अर्थ है कि संघ में कुछ नही मिलता है, न मिलने वाला है, बल्कि यहाँ केवल देना ही देना होता है, और यह 'देना' कुछ भी हो सकता है (समय, धन या फिर जीवन)। इस प्रश्न के उत्तर के लिए विचार करने पर यह निष्कर्ष निकला कि संघ से जुडक़र मुझे इतना 'अधिक' मिला है जो संघ से दूर रहने वाले व्यक्ति के अकल्पनीय है। वह भी बड़ी ही सरलता और सहजता से, कोई फीस नही दी, कोई डांट फटकार नही सुनी, कोई जुगाड़ नही लगाना पड़ा, कोई सेमीनार या वर्कशॉप नही करनी पड़ी, किसी से कोई विशेष आग्रह नही करना पड़ा, जो भी मिला सिखाने वाला मिला, सहयोग करने वाला मिला, आगे बढ़ाने वाला मिला। **अब बताता हूँ क्या क्या मिला :**

1. संघ की शाखा के कारण मेरी दिनचर्या सही हुई। शाखा जाने के लिए सुबह जल्दी उठने की आदत बनी। आज भी बहुत लोग ऐसे मिल जायेंगे जिन्होंने सूर्योदय नही देखा होगा। मैं रोज सूर्य दर्शन करता हूँ।
2. संघ की शाखा के कारण मेरी जल्दी सोने और उठने की आदत बनी। संघ के वर्गों में भूमि पर सोना पड़ता है, इसका लाभ यह हुआ कि मुझे कहीं भी बड़ी आसानी से नींद आ जाती है। विशेष बिस्तर या व्यवस्था कि आवश्यकता नही होती और न ही नींद लेने के लिए कोई दवा-दारू की आवश्यकता होती है। उठने के लिए किसी अलार्म की भी आवश्यकता नहीं पड़ती। और यदि कभी कभार रात में जागना पड़े तो भी कोई समस्या नही होती। संघ के वर्गों में सुरक्षा कार्य करने का अनुभव काम आता है।
3. भोजन को लेकर घरों में किचकिच होना बड़ी आम बात है। लेकिन, संघ के संस्कार के कारण मुझे जो भोजन मिलता है उसको बड़े आनंद से खाता हूँ। नमक मिर्ची कम है या ज्यादा उससे कोई फर्क न पड़ता। कभी भोजन जूठा नही छोड़ता।
4. शाखा में इतना व्यायाम होता है कि उक्त प्रश्न पूछने वाले सोच भी नही सकते। मैं बाबा रामदेव के प्रादुर्भाव से बहुत पहले अपने शिशुकाल में योग, आसन, सूर्य नमस्कार आदि शाखा में ही सीख गया था। बल्कि आठवीं कक्षा में अपने गाँव की शाखा में लोगों को सिखाने लग गया था।
5. आज के बच्चे खेलों के नाम पर क्या जानते हैं? कुछ खेल जो उनके स्कूलों में सिखाये गये होंगे, जिनमें न आनंद आता है और न ही खेल और टीम भावना का निर्माण होता है। शाखा के कारण मैं हजारों खेल खेल सकता हूँ, इतने खेल हैं कि साल भर कोई रिपीट नही होगा, हर बार नया खेल होगा। हर खेल में कोई न कोई अच्छा सन्देश होगा, असीमित आनंद होगा, टीम और खेल भावना का निर्माण होगा इसकी गारंटी स्टाम्प पेपर पर दे सकता हूँ।
6. आजकल शहरों में हजारों रुपये खर्च करके बच्चों को आत्मरक्षा करना सिखाया जाता है। वहीं संघ की शाखा में यह सब निशुल्क सिखाया जाता है। मुझे भी संघ के वर्गों में आत्मरक्षा सिखाई गयी।
7. इसके साथ ही दंड (लाठी) चलाना भी सीखा। वैसे मेरा विषय नियुद्ध (कराटे) रहा है पर मैं दंड भी चला सकता हूँ।
8. संघ की शाखा में रोज देशभक्ति से ओत-प्रोत गीत गाये जाते हैं। संघ के कार्यक्रमों में गीत गाने के अवसर भी मिलते हैं, जिससे मंच का भय भी समाप्त हो जाता है। मैंने हजारों लोगों की उपस्थिति में विशाल मंचों से गाया है।
9. अनुशासन को लेकर आजकल के माता-पिता को शिकायत रहती है। जबकि संघ का दूसरा नाम ही स्वत- स्फूर्त अनुशासन है। बड़े से बड़ा उदंड बच्चा भी संघ की शाखा में जाकर अनुशासित हो सकता है और वह भी अपने आप, प्रेमवत्, बिना किसी दंड के। मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ।
10. आज के बच्चों से बॉलीवुड के अभिनेता, अभिनेत्रियों और क्रिकेटरों के नाम पूछो तो फटाफट गिना देंगे, लेकिन, यदि

क्रांतिकारियों के नाम पूछो तो वे इधर-उधर देखने लगते हैं। संघ की शाखा जाने वाला बच्चा बप्पा रावल, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविंद सिंह, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, चंद्रशेखर आज़ाद जैसे अनेक महान देश और धर्म भक्तों की वीरता भरी कहानियां सुनकर बड़ा होता है। इससे उसमें अपने स्वधर्म और राष्ट्रधर्म का भाव तथा कर्तव्य की भावना बड़ी ही सहजता से निर्मित हो जाती है। उसके हीरो बॉलीवुड के लोग नही होते हैं, बल्कि श्रीराम, श्रीकृष्ण और हनुमान जी होते हैं।

11. छोटी उम्र में ही शाखा के कारण नेतृत्व क्षमता का सृजन हो जाता है।
12. शाखा में होने वाली नियमित बैठकों और चर्चाओं के परिणामस्वरूप तर्कशक्ति का विकास होता है, सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है। सबके विचार सुनने का गुण भी निर्मित होता है और अपनी बात रखने का कौशल भी विकसित होता है। ये सब बड़े-बड़े प्रोफेशनल कोर्सेस में भी नही सिखाया जा सकता।
13. यदि बच्चा संघ की शाखा में जाने लगता है तो फिर उसे कोई भी बुरी आदत दूर से भी स्पर्श नही कर सकती। स्कूल और कॉलेज के दिनों में होने वाला भटकाव भी उसका कुछ नही बिगाड़ सकता, क्योंकि उसके पास भटकने का समय ही नही बचता। बच्चा संघ के संस्कारों से स्थिर और संतुलित रहता है और वह अपना समय सकारात्मक कार्यों में लगाता है।
14. बच्चे की मित्रता अच्छे लोगों से होती है, उसके संबंध भी अच्छे लोगों से होते हैं, उसकी छवि भी अच्छी बनती है।
15. संघ के अलग-अलग कार्यविभागों में काम करते-करते बच्चे का शारीरिक, बौद्धिक विकास तो होता ही है और साथ ही साथ व्यवस्था कौशल्य भी आता है, और संघ का व्यवस्था कौशल किसी भी मैनेजमेंट कम्पनी से बेहतर होगा। लोगों के साथ आत्मीय सम्पर्क कैसे करना है और सम्पर्क के बाद आत्मीय संबंध कैसे बनाये रखना है, यह कौशल भी बड़ी सहजता से स्वत: ही निर्मित हो जाता है।
16. मैंने आज तक संघ के स्वयंसेवकों को आपस में लड़ते-झगड़ते नही देखा है। यह किसी के लिए भी आश्चर्यजनक बात हो सकती है। शाखाओं में विविध आयु वर्ग और सामाजिक पृष्ठभूमि के लोग आते हैं, सबका अनुभव भी अलग-अलग होता है, इससे लाभ यह होता है कि सबसे सम्पर्क होता है, बातचीत होती है, बौद्धिक विकास के साथ-साथ आचरण और व्यवहार भी सही रहता है।
17. अक्सर माता-पिता बताते हैं कि हमारा बच्चा शर्माता है, झिझक करता है, डरता है आदि आदि, लेकिन संघ की शाखा जाने वाला बाल स्वयंसेवक आत्मविश्वास से परिपूर्ण रहता है।
18. अपनी शिक्षा और अन्य कार्यों से मैं दूसरे राज्यों में रहा हूँ/रहता हूँ, हर जगह संघ के स्वयंसेवक मिलते हैं, उनके साथ कभी भी यह अनुभूति नही होती है कि मैं घर से दूर हूँ। हर जगह अपनत्व मिलता है और शुद्ध सात्विक प्रेम मिलता है। असली 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का साक्षात्कार होता है।
19. संघ की शाखा से मिले संस्कारों के कारण आज तक मेरे संबंध सभी से बहुत अच्छे हैं इसलिए परिवार, मित्रों, रिश्तेदारों और समाज के लोगों से हर काम और परिस्थिति में भरपूर सहयोग मिलता है।
20. अपने बाल्यकाल में अपने जिन मित्रों को मैंने संघ से जोड़ा था आज वे अपने बच्चों को संघ से जोडने के लिए मुझे सौंपते हैं और स्वयं भी संघ का काम करते हैं।
21. संघ के संस्कारों के कारण परिवार में एकजुटता, संस्कार और आनन्द की अनुभूति होती है।
22. संघ के संस्कारों के कारण ही स्वयंसेवक पूरे समाज को भी अपना परिवार समझकर सेवा कार्य करते रहते हैं। इसके हजारों उदाहरण मिल जायेंगे, इसीलिए आरएसएस को 'रेडी फॉर सेल्फलेस सर्विस' भी कहा जाता है।
23. जहाँ लोगों के बीच दूरियाँ और भेदभाव व्याप्त हैं, वहींसंघ के स्वयंसेवक सबके साथ आत्मीयता के साथ रहते हैं, बिना किसी भेदभाव के व्यवहार करते हैं। संघ के स्वयंसेवक अस्पृश्यता को पाप मानते हैं। संघ के प्रशिक्षण वर्गों के छुआछुत ढूंढने वालों को निराशा मिलेगी।
24. संघ की शाखा में एक प्रौढ़ द्वारा अपने से आधी आयु के स्वयंसेवक को प्रणाम करते हुए देखना कोई आश्चर्यजनक घटनाक्रम नहीं होता। कई बार तो ऐसा भी हो सकता है कि पिता अपने पुत्र को प्रणाम कर रहा है, और विद्यालय का कोई अध्यापक शाखा में अपने विद्यार्थी को प्रणाम कर रहा है। शाखा के संस्कार के कारण ही मैं सभी से (छोटे/बड़े) 'जी' कहकर बात करता हूँ।
25. मैं संघ से मिले संस्कारों के कारण स्वयं को 'आल राउंडर' मानता हूँ। अभी तक जो लिखा है, वह केवल अंश मात्र है। ये सब आपको संघ के विशुद्ध स्वयंसेवक में आम मिलेगा। ◆◆◆

विद्यार्थियों को पीएम विद्या लक्ष्मी योजना के तहत मिलेगा 10 लाख तक सस्ता कर्ज

केंद्र सरकार ने मेधावी छात्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए पीएम-विद्यालक्ष्मी योजना को मंजूरी दे दी है। इसके तहत विद्यार्थियों को 10 लाख रूपए तक का सस्ता कर्ज मिलेगा। साथ ही सरकार 7.5 लाख रुपए तक के कर्ज पर 75 फीसदी क्रेडिट गारंटी भी देगी। केंद्र सरकार ने पीएम विद्यालक्ष्मी योजना को मंजूरी दी है। इस योजना का मकसद है कि मेधावी छात्रों की पढ़ाई में अड़चन न आए। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि पीएम विद्यालक्ष्मी योजना का लाभ एजुकेशन लोन में मिलेगा। उन्होंने बताया कि जरूरतमंद बच्चों की पढ़ाई के लिए बैंकों से 10 लाख रुपये तक का शिक्षा ऋण सस्ती दरों पर लिया जा सकेगा। वैष्णव ने बताया कि मेधावी बच्चे बैंकों से उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ाई के लिए लोन ले सकेंगे। इस योजना के प्रभाव से अब पैसे की कमी के कारण बच्चों की उच्च शिक्षा में कोई अड़चन नहीं आएगी।

भारत की कंप्यूटिंग क्षमता में 20 गुना होगी बढ़ोतरी

भारत बनेगा एआई का पावर हाउस

भारत वैश्विक कम्प्यूटर उद्योग के लिए बहुत प्रिय है। यह दुनिया भर की लगभग हर कंपनी की आईटी के केंद्र और मूल में है। भारत जल्द ही प्रभावशाली एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) समाधानों का निर्यात करेगा। एनवीडीया के संस्थापक एवं सीईओ जेन्सेन हुआंग ने कहा कि भारत में 2024 में कंप्यूटिंग क्षमता में 20 गुना की वृद्धि होगी। सॉफ्टवेयर निर्यात का केंद्र भारत एआई निर्यात में अग्रणी बनने के लिए तैयार है। हुआंग ने एनवीडीया एआई शिखर सम्मेलन 2024 में कहा, भारत ने सॉफ्टवेयर उत्पादन के लिए पहले एक बैंक ऑफिस बनने पर ध्यान दिया। अब एआई के विकास और वितरण में दुनिया का पावर हाउस बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है जो नाटकीय रूप में प्रभावशाली होगा। एनवीडीया की भारत में 6 स्थानों पर पहले से मौजूदगी है। अमेरिकी कंपनी अपने त्वरित कंप्यूटिंग ट्रैक से संचालित आई इन्फ्रा के लिए उद्योग क्लाउड प्रदाताओं व स्टार्टअप संग काम करती है।

बड़ी कामयाबी... भारत निर्मित पिनाक खरीदने की तैयारी में फ्रांस

फ्रांस अपनी रक्षा जरूरतों को पूरी करने के लिए भारत निर्मित पिनाक मल्टी-बैरल रॉकेट लॉन्चर सिस्टम खरीदने पर विचार कर रहा है। ऐसा कोई सौदा रक्षा क्षेत्र में 'मेक इन इंडिया' पहल की एक बड़ी सफलता साबित होगा। पिनाक मल्टी-बैरल रॉकेट लॉन्चर के मूल्यांकन के लिए एक शीर्ष फ्रांसीसी सैन्य अधिकारी अभी भारत आए हुए हैं। फ्रांसीसी सेना के ब्रिगेडियर जनरल स्टीफन रिचो ने कहा, हम अपनी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए इस मल्टी-बैरल रॉकेट लॉन्चर सिस्टम का मूल्यांकन कर रहे हैं। हमें इस तरह के सिस्टम की जरूरत है। उन्होंने कहा कि पिनाक व ऐसे अन्य सिस्टम का तुलनात्मक मूल्यांकन किया जा रहा है।

75 किमी से अधिक है मारक क्षमता

यह रॉकेट सिस्टम कई वैरिएंट में उपलब्ध है और 75 किलोमीटर और उससे भी अधिक दूरी तक लक्ष्य को भेद सकता है। इससे पहले आर्मेनिया इसे खरीदने के लिए ऑर्डर दे चुका है और कई अन्य देश इसमें रुचि दिखा रहे हैं। पिनाका एमबीआरएल को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने विकसित किया है और इसका उत्पादन सोलर इंडस्ट्रीज, लार्सन एंड टुब्रो, टाटा और ऑर्डनेंस फैक्ट्री बोर्ड कंपनीज आदि मिलकर कर रहे हैं।◆◆◆

70 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों को पांच लाख तक मुफ्त इलाज की सुविधा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने धन्वंतरि जयंती और नौवें आयुर्वेद दिवस पर देश के 70 वर्ष से अधिक आयु के सभी बुजुर्गों को मुफ्त इलाज की सुविधा दी है। आय के भेदभाव के बिना सभी बुजुर्ग अब आयुष्मान योजना के दायरे में आएंगे और उन्हें 5 लाख रुपए तक का इलाज मुफ्त दिया जाएगा। इसके लिए बुजुर्गों को आयुष्मान वय वंदना कार्ड किया जाएगा। पीएम ने इस मौके पर देश को 12,850 करोड़ की विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं की सौगात दी।◆◆◆

सीपीएस तैनाती पर हाईकोर्ट का फैसला स्वागत योग्य

माननीय उच्च न्यायालय ने सीपीएस कानून को बताया अवैध व असांविधानिक

आखिरकार हिमाचल प्रदेश सरकार में सीपीएस की तैनाती की सुनवाई के बाद माननीय उच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में छह सीपीएस को बर्खास्त कर दिया। इस निर्णय से जनता में खुशी की लहर तो दौड़ गई परंतु ज्यादा दिन टिक नहीं पाई क्योंकि सरकार ने इस निर्णय को माननीय उच्चतम न्यायालय में आनन-फानन में चुनौती दे डाली और विपक्ष ने भी कैबिएट फाइल कर दिया ताकि उनके पक्ष को भी सुना जा सके। अब हिमाचल प्रदेश में मौजूदा सरकार के पास बहुमत होने के बाद भी कुछ वरिष्ठ विधायक ऐसे हैं जो मंत्री अथवा अध्यक्ष उपाध्यक्ष बनकर झंडी और सुख सुविधाओं की आस लगाए बैठे हैं। इधर अब छह सीपीएस भी झंडी, कार्यालय और सुविधाओं के छिन जाने के बाद मंत्री और अध्यक्ष, उपाध्यक्ष पद के लिए जोड़-तोड़ करने में जुट जाएंगे। सरकार का आधा कार्यकाल होने को है और बाकी कार्यकाल भी इसी राजनीतिक उठा पटक में बीत जाएगा। एक ओर सरकार जनता की सुख सुविधा छीनने पर आमादा है। व्यवस्था परिवर्तन के बहाने आर्थिक संकट से जूझने के लिए कुछ स्कूल बंद कर दिए गए हैं गैर आवश्यक पद खत्म किए जा रहे हैं। बिजली पानी की सब्सिडी बंद हो चुकी है परंतु दूसरी ओर राजनेताओं के वेतन भत्ते बढ़ाने में धन की कमी नहीं है। राजनेताओं और अधिकारियों की सुविधाओं फिजूल खर्चियों में कटौती करने की हिम्मत नहीं जुटाई जा सकती है। इसलिए कड़े फैसलों का सामना सिर्फ बेरोजगार और साधनहीन जनता को करना पड़ रहा है। सरकारी नौकरी का टोटा है। खेत खलियान सूअर और बंदर उजाड़ रहे हैं। सरकार मूक दर्शक होकर तमाशा देख रही है।

माननीयों की सुख सुविधाओं में कोई कटौती किए जाने की ना सरकार की मंशा है और ना ही कोई राजनीतिक इच्छाशक्ति। कर्मचारियों पर तो यह सरकार वैसे ही फ़िदा है, उनके हित की रक्षा करने के लिए पूरी मुस्तैदी से साथ देती है। जनता को सुविधा मिल सके, यह प्राथमिकता बहुत कम देखने में मिल रही है। छह सीपीएस गए। बढिया हुआ। लोगों ने एमएलए चुनकर भेजा था, सुक्खू भाई ने सीपीएस बना दिया। सीपीएस अभिप्राय मुख्य संसदीय सचिव। जरूरत नहीं थी, फिर भी बना दिए गए। शिमला स्थित प्रदेश हाइकोर्ट ने इन पदों को असंवैधानिक बताते हुए ख़ारिज कर दिया। लेकिन सुक्खू सरकार सुप्रीम कोर्ट चली गई है। हालांकि जरूरत नहीं थी। सीपीएस बेशक नहीं रहे, एमएलए तो हैं ही। घोड़ा-गाड़ी गई, झंडी गई, डीए-सीए गया, दफ्तर, बाबूसाबू सब गए। जनता का बहुत धन बचा। शुक्रिया हाइकोर्ट!

सब जानते हैं कि सुक्खू सरकार आर्थिक संकट से उबरने के लिए कई उपाय कर रही है। ताजा स्थिति यह रही कि गांव-गांव में पानी मुफ्त नहीं रहा। बिल भेजे जा रहे हैं। 300 यूनिट तक बिजली मुफ्त देने की बात हुई थी। वह तो नहीं मिली पर जयराम ठाकुर की निवर्तमान भाजपा सरकार ने 125 यूनिट बिजली की खपत निशुल्क की थी, वह भी चुन-चुनकर बंद कर दी गई है। अनेक सरकारी दफ्तर और स्कूल बंद कर दिए गए। कर्मचारियों के गैर जरूरी रिक्त पद निरस्त हो गए। गैरजरूरी की परिभाषा क्या है, यह राम जाने। माली हालात को सुधारने के लिए और भी जतन किए जा रहे हैं। करने भी चाहिए।

पहले वाली सरकारें यदि करती तो ये दिन न देखने पड़ते। जो जतन किए जा रहे हैं उनमें अब हाइकोर्ट ने भी अपना योगदान कर दिया है। छह एमएलए सीपीएस पदों से हटाए गए हैं। इससे हर महीने सरकार के परोक्ष-अपरोक्ष करोड़ों रुपए बचेंगे। फिर यह छटपटाहट क्यों है ? हाइकोर्ट के फैसले के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में दस्तक देने की जरूरत क्या है ? यह एक राजनीतिक जरूरत हो सकती है, जिसका कोई औचित्य नहीं है। फिलहाल जनता हाइकोर्ट के निर्णय से प्रसन्न दिख रही है। ◆◆◆

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

शिक्षा बचाओ आंदोलन के राष्ट्रीय संयोजक दीनानाथ बत्रा का निधन

महान शिक्षाविद्, आदर्श शिक्षक, शिक्षा बचाओ आंदोलन के राष्ट्रीय संयोजक दीनानाथ बत्रा का 94 वर्ष की आयु में गुरुवार 7 नवंबर 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। शिक्षा बचाओ के राष्ट्रीय संयोजक और शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के संस्थापक एवं अध्यक्ष दीनानाथ बत्रा का जन्म 5 मार्च 1930 को अविभाजित भारत के राजनरपुर जिला डेरा गाजी खान (अब पाकिस्तान में) में हुआ था।

वे राष्ट्रीय स्वयंसेवी संगठन विद्या भारती के महासचिव भी रह चुके हैं और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से भी जुड़े हुए हैं। उन्हें शिक्षा में हिंदुत्व विचारों को बढ़ावा देने के लिए जाना जाता है। 1955 से डीएवी विद्यालय डेरा बस्सी पंजाब में शिक्षक के रूप में अपना करियर शुरू करने वाले दीनानाथ बत्रा 1965 से 1990 तक कुरुक्षेत्र में प्रिंसिपल के पद पर भी काम कर चुके हैं। वे अखिल भारतीय हिंदुस्तान स्काउट्स एंड गाइड्स के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। वे विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षण संस्था के महासचिव भी थे। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित दीनानाथ बत्रा को शैक्षणिक कार्यों के प्रति समर्पण के लिए कई संस्थाओं ने सम्मानित किया है। उन्होंने शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए देशव्यापी आंदोलन चलाए हैं, जिसके चलते भारत केंद्रित शिक्षा को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का आधार बनाया गया है।

उन्हें स्वामी कृष्णानंद सरस्वती सम्मान, स्वामी अखंडानंद सरस्वती सम्मान, भाऊराव देवरस सम्मान जैसे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। वह अक्सर अपने विचारों के कारण विवादों में रहे हैं। उन्हें इतिहास और पाठ्यक्रम में अपने बदलावों के लिए भी जाना जाता है, जिसके कारण कई विवाद हुए हैं। उन्होंने इतिहास के पाठ्यक्रम में बदलाव की वकालत की है, जिसके अनुसार भारतीय इतिहास को हिंदुत्व के नजरिए से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। उन्होंने अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा का विरोध किया और हिंदी माध्यम को बढ़ावा दिया। उन्होंने पाठ्यपुस्तकों में बदलाव की मांग की ताकि संस्कृति और मूल्यों को अधिक महत्व दिया जा सके। उन्होंने राष्ट्रीय और शैक्षिक आंदोलनों में अग्रणी भूमिका निभाई है और कई बार जेल भी गए।◆◆◆

विनम्र श्रद्धांजलि

मा. दीनानाथ बत्रा जी

अपना सर्वस्व शिक्षा को समर्पित करने वाले शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के संस्थापक अध्यक्ष व शिक्षा बचाओ आन्दोलन के राष्ट्रीय संयोजक मा. दीनानाथ बत्रा जी के निधन का समाचार अत्यन्त दुःखद है। वे एक आदर्श शिक्षक और उच्च कोटि के शिक्षाविद थे। शिक्षा क्षेत्र में उनका योगदान अतुलनीय है। विशेषकर पाठ्यक्रमों में इतिहास की विकृतियों को दूर करने के लिए वे सतत् प्रयत्नशील रहे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उनको विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है एवं ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान दें और सद्गति प्रदान करें।

ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति।

मोहन भागवत, सरसंघचालक
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

विनम्र श्रद्धांजलि

श्रीगोपाल व्यास जी

श्री श्रीगोपाल व्यास जी का दिनांक 7 नवंबर 2024 गुरुवार को देवलोक गमन हुआ। श्रीगोपाल जी संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता रहे और पूर्व में क्षेत्र प्रचारक, क्षेत्र कार्यवाह एवं पूर्व में राज्यसभा के सदस्य भी रहे। सादगी पूर्ण, कर्मठता पूर्ण, स्नेहशील संघशरण एवं समर्पित व्यक्तित्व का उनका जीवन सदैव स्मरणीय रहेगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इस दुःख की घड़ी में उनके सभी परिवारजनों के प्रति अपनी गहरी शोक संवेदना प्रकट करता है। हम सब परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिव्य आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

।। ॐ शान्तिः ।।

मोहन भागवत, सरसंघचालक
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

दर्द दिल में छिपा

मां ने बलिदानी बेटे पर किया गर्व

'जब तक सूरज जांच रहेगा'

नारों से गूंजा बरनोग गांव

नायब सूबेदार राकेश कुमार जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ में आंतकियों से मुठभेड़ में शहीद हो गए। हिमाचल के वीर नायब सूबेदार राकेश कुमार को मंडी में अंतिम विदाई दी गई।

मंडी के वीर सपूत राकेश कुमार के बलिदान होने से गमगीन परिवार ने दुख की घड़ी में भी देशभक्ति का जज्बा दिखाया। 90 साल की मां बेटे की पार्थिव देह पहुंचने पर सीना चौड़ा कर खड़ी रहीं। मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति देने पर मां अपने बेटे पर गर्व महसूस कर रही थी। घर से लेकर श्मशानघाट तक जब तक सूरज चांद रहेगा तब तक राकेश कुमार का नाम रहेगा... के नारों से गूंज उठा।

दर्द को दिल में छिपाकर पत्नी भानु प्रिया, बेटे प्रणव और बेटी यशस्वी ठाकुर ने भी हिम्मत नहीं हारी। बेटी यशस्वी और बेटे प्रणव ने आतंकवादियों को कड़ा संदेश दिया कि उनके बलिदानी पिता को तो तुमने छीन लिया लेकिन अपनी माटी के लिए उनके परिवार ने हिम्मत नहीं हारी है। आतंकवाद के विरुद्ध परिजनों, स्थानीय लोगों, नेताओं और पूर्व सैनिकों का जोश भी देखने लायक रहा। राकेश के बलिदान से पैतृक गांव बरनोग ही नहीं, बल्कि पूरे मंडी जिले में शोक की लहर रही।

घर के आंगन में पार्थिव देह को जैसे ही सैनिक टुकड़ी ने नीचे उतारा गया तो बलिदानी की पत्नी भानुप्रिया और बेटा प्रणव उससे लिपट गए और फूट-फूट कर रोने लगे। यहीं परिजनों ने राकेश कुमार के अंतिम दर्शन किए। इस दौरान मौजूद रिश्तेदार और हजारों ग्रामीणों की आंखें नम हो गईं। इस दौरान जनसैलाब भी उमड़ पड़ा। हजारों लोगों ने अपने वीर सपूत को नम आंखों से अंतिम विदाई दी। श्मशानघाट में सेना के जवानों ने बेटे प्रणव को तिरंगा सौंप सैल्यूट किया।

नेरचौक मेडिकल कॉलेज से सुबह करीब 9:00 बजे जांबाज नायब सूबेदार राकेश की पार्थिव देह को जीप में छम्यार पंचायत लाया गया। नेरचौक मेडिकल कॉलेज में व्यापार मंडल के अलावा प्रशिक्षु डॉक्टरों ने बलिदानी राकेश कुमार की कुर्बानी को सैल्यूट किया। यहां से फूलों की बारिश के बीच उन्हें पैतृक गांव के लिए रवाना किया गया। इस दौरान नेरचौक, डडौर, कंसा, स्यांह, लोहारा, नलसर, बग्गी समेत बलिदानी के घर तक सडक़ किनारे लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। हर कोई भारत माता के इस वीर सपूत की एक झलक देखने के लिए टकटकी लगाए इंतजार करता रहा।◆◆◆

पद्मश्री मुसाफिर राम भारद्वाज का 101 वर्ष की आयु में निधन; हिमाचल में शोक की लहर

पद्मश्री से सम्मानित और लोक कलाकार मुसाफिर राम भारद्वाज का 101 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वह पारंपरिक वाद्य यंत्र पौण माता बजाने में माहिर थे और उन्हें 2014 में कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। उनके निधन से प्रदेश में शोक की लहर है। उन्होंने वर्ष 2010 में दिल्ली में हुई राष्ट्रमंडल खेलों में भी प्रस्तुति दी थी। विश्व संवाद केंद्र शिमला ने भी उनके निधन पर शोक प्रकट किया और दिवंगत आत्मा की शांति की प्रार्थना की।◆◆◆

हिमाचल की नेहा दीक्षित

की आवाज का इंडियन आइडल के मंच पर जलवा

सिंगिंग के बड़े रियलिटी शो इंडियन आइडल के 15वें सीजन में हिमाचल प्रदेश की नेहा दीक्षित ने अपनी सुरीली आवाज से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया है। ऑडीशन राउंड के दौरान अपनी शानदार गायकी से जजों का दिल जीतने के बाद अब नेहा थिएटर राउंड में पहुंच चुकी हैं। ऑडीशन के दौरान नेहा ने 'बदमाश दिल तो ठग है बड़ा...' गीत प्रस्तुत किया, जिससे जजों पर गहरी छाप छोड़ने में सफल रहीं।

इस दौरान मशहूर गायिका श्रेया घोषाल ने नेहा को गायकी की बारीकियां समझाईं और नेहा ने बाद में इन खूबियों को बखूबी अपनाया। इसके साथ ही जज विशाल और रैपर बादशाह ने भी उनकी गायकी की जमकर तारीफ की। इस सफलता के साथ ही एक बार फिर हिमाचल प्रदेश का नाम इंडियन आइडल के मंच पर रोशन हुआ है। इससे पहले भी हिमाचल प्रदेश से कई गायक जैसे अनुज शर्मा, गीता भारद्वाज और कृतिका तनवर इस मंच तक अपनी आवाज का जादू बिखेर चुके हैं। नेहा का ऑडीशन वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। नेहा दीक्षित ने वर्ष 2015 में शिमला स्थित राजकीय कन्या महाविद्यालय में दाखिला लिया था, और यहीं से उनके संगीत के पेशेवर सफर की शुरुआत हुई। यहां उन्होंने प्रोफेसर गोपाल भारद्वाज से संगीत की शिक्षा ली और विभिन्न संगीत प्रतियोगिताओं में भाग लिया। वर्तमान में वे संगीत के प्रोफेसर डॉ. टिंकू से उस्तादी हासिल कर रही हैं। इस तरह, नेहा की सफलता ने न केवल हिमाचल प्रदेश बल्कि पूरे देश को गर्व महसूस कराया है। उनका आगामी सफर आगे नहीं बढ़ सका, किन्तु निर्णायकों को आशा है कि नेहा की मधुर आवाज भविष्य में उसे आगे ले जाएगी। ◆◆◆

गांव से गौरव तक

कैप्टन रामेश्वर ठाकुर को वेटरन अचीवर अवार्ड

शिमला में सेना की पश्चिमी कमान के आरट्रैक (आर्मी ट्रेनिंग कमांड) में आयोजित एक विशेष समारोह में कैप्टन रामेश्वर ठाकुर को वेटरन अचीवर अवार्ड से सम्मानित किया गया। इस मौके पर देश के सेनाध्यक्ष जनरल उपेंद्र द्विवेदी, पश्चिमी कमान के चीफ ऑफ स्टाफ लेफ्टिनेंट जनरल डीएस कुशवाहा और पश्चिमी कमान के आर्मी कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल देवेंद्र शर्मा समेत कई अन्य सैन्य अधिकारी मौजूद रहे। समारोह में कैप्टन रामेश्वर ठाकुर की उपलब्धियों और उनके प्रेरणादायक सफर के बारे में बताया गया। शिमला के एक छोटे से गांव लोहाली (जुब्बड़हट्टी एयरपोर्ट के समीप) से निकलकर उन्होंने अपनी मेहनत और लगन से पूरे देश में अपनी पहचान बनाई। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा शिमला के सरकारी स्कूल घणाहट्टी से प्राप्त की और फिर संजौली कॉलेज से बीए ऑनर्स की डिग्री हासिल की।

सीडीएस परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने ओटीए चेन्नई से सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया और सेना की प्रतिष्ठित इन्फैंट्री बटालियन आउट रैम्स में 1986में कमीशन हासिल किया। 1986से 1991 तक उन्होंने यहां सेवा दी और घाटी में आतंक विरोधी अभियानों में सक्रिय भूमिका निभाई।

सेना में अपनी सेवाओं के बाद उन्होंने आईडीबीआई बैंक में सुरक्षा अधिकारी के रूप में काम किया। इसके बाद 1994 में वे हिमाचल पुलिस सेवा में शामिल हुए। पंजाब पुलिस अकादमी में उन्होंने बेस्ट इन इंडोर, बेस्ट इन आउटडोर और ऑल राउंड बेस्ट ऑफिसर जैसे प्रतिष्ठित खिताब हासिल किए, जो उनकी बहुमुखी प्रतिभा का प्रमाण है।◆◆◆

हिमाचल की वंशिका गोस्वामी ने विश्व मुक्केबाजी चौंपियनशिप में जीता स्वर्ण पदक

हिमाचल प्रदेश की बेटी वंशिका गोस्वामी ने एक और बड़ी उपलब्धि हासिल करते हुए अमेरिका के कोलोराडो में आयोजित अंडर-19 विश्व मुक्केबाजी चौंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया है। यह गौरवपूर्ण अवसर हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के ज्वालामुखी क्षेत्र से संबंध रखने वाली वंशिका और उनके परिवार के लिए खास है। 80 किलोग्राम से अधिक वजन वर्ग में खेले गए इस प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में वंशिका ने जर्मनी की गेट विक्टोरियो को तीनों राउंड में शानदार प्रदर्शन करते हुए पराजित किया। वंशिका का सफर और खेलों से जुड़ावः वंशिका के लिए खेलों के प्रति यह जुनून कोई नई बात नहीं है। बचपन से ही खेलों के प्रति उनकी गहरी रुचि रही है। उनके पिता शशिकांत गोस्वामी पुलिस विभाग में कार्यरत हैं, और उन्हीं की प्रेरणा से वंशिका ने शुरुआत में जूडो-कराटे सीखना शुरू किया। 9वीं कक्षा तक वह ब्राउन बेल्ट भी हासिल कर चुकी थीं। 10वीं कक्षा के बाद अपने पिता के साथ नगरोटा बगवां के बड़ोह क्षेत्र में जाकर उन्होंने बॉक्सिंग में हाथ आजमाने का निर्णय लिया। बॉक्सिंग में पहला कदम और शुरुआती सफलताः वंशिका का दाखिला सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल समलोटी में हुआ, जहाँ फिजिकल एजुकेशन के लेक्चरर कैलाश शर्मा ने उनके खेल के प्रति जुनून को पहचाना और उन्हें बॉक्सिंग में प्रशिक्षण देना शुरू किया। अपने पहले ही साल में वंशिका ने राज्य स्तर की प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक और राष्ट्रीय स्तर पर रजत पदक जीता। उनके कोच कैलाश शर्मा ने उन्हें उच्च स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए हरियाणा भेजने की सलाह दी, जहाँ से उनका चयन साई रोहतक में हुआ। साई रोहतक में मुख्य कोच अमनप्रीत के मार्गदर्शन में उन्होंने अपने खेल को निखारा और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बनाया। शैक्षणिक पृष्ठभूमि और वर्तमान स्थितिः वंशिका ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा डीएवी भरोरी और शिवालिक इंटरनेशनल स्कूल से प्राप्त की। वर्तमान में वह डिग्री कॉलेज ज्वालाजी से शारीरिक शिक्षा में स्नातक की डिग्री कर रही हैं। शिक्षा के साथ-साथ बॉक्सिंग के प्रति उनकी लगन और समर्पण ने उन्हें इस ऊँचाई पर पहुँचाया है।◆◆◆

देश-विदेश में किया नाम रोशन

इसी साल मिल चुका है एक और आईबीआर अचीवर अवार्ड

हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला के रोहड़ू के अन्द्रेव्ठी गांव की नन्ही शिव्या बालनाटाह ने महज 1 साल, 11 महीने और 20 दिन की उम्र में बाल दिवस पर विश्व रिकॉर्ड बनाकर इतिहास रच दिया है। रविकांत बालनाटाह की पोती और अभय तथा आकांक्षा बालनाटाह की बेटी, शिव्या ने केवल 1 मिनट 45 सेकंड में 40 देशों के झंडों और उनकी राजधानियों की पहचान कर यह अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किया, जिसे विश्व रिकॉर्ड बुक द्वारा आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त है।

12 नवंबर को इंदौर, मध्य प्रदेश में आयोजित विश्व रिकॉर्ड बुक सम्मेलन में शिव्या को सम्मानित किया गया। शिव्या की इस उपलब्धि की यात्रा उनके माता-पिता की प्रेरणा और समर्पण से प्रारंभ हुई, जिन्होंने उसकी तेज समझ को पहचानते हुए झंडों और राजधानियों का ज्ञान देना शुरू किया। धीरे-धीरे यह साधारण गतिविधि शिव्या के लिए जुनून बन गई और कठिन अभ्यास के बाद उसने यह ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की।

शिव्या की यह पहली सफलता नहीं है। इस साल की शुरुआत में उसे आकृतियों, वस्तुओं, जानवरों और भावनाओं की पहचान करने की निपुणता के लिए 'आईबीआर अचीवर' का खिताब भी दिया गया था। उसकी अद्भुत प्रतिभा ने न केवल बालनाटाह परिवार, बल्कि पूरे हिमाचल प्रदेश को गर्व महसूस कराया है और बच्चों की प्रतिभाओं को पहचानने और संवारने की प्रेरणा भी दी है। शिव्या की इस बड़ी उपलब्धि प्राप्त करने एवं भविष्य में देश व हिमाचल का नाम रोशन करने के लिए प्रदेशवासियों की तरफ से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।◆◆◆

शिमला में बनेगा

दुनिया का दूसरा सबसे लंबा रोपवे

वर्तमान में दुनिया के 10 सबसे लंबे रोपवे

तारादेवी-शिमला रोपवे का निर्माण कार्य 2025 में शुरू हो जाएगा। इसकी लंबाई 13.79 किलोमीटर होगी। ये रोपवे मां तारा देवी से शिमला तक बनेगा। इस रोपवे में 13 स्टेशन होंगे। पूरी तरह से तैयार होने के बाद इसमें 660 ट्रॉली लगाई जाएगीं। इसके निर्माण का जिम्मा रोपवे एंड रैपिड ट्रांसपोर्ट सिस्टम डवलपमेंट कॉरपोरेशन का होगा। इसे न्यू डवलपमेंट बैंक यानी एनडीबी और राज्य सरकार के सहयोग से बनाया जाएगा। यह दुनिया का दूसरा सबसे लंबा रोपवे होगा।

एमआई टेलीफ़ेरिको : ये रोपवे साउथ अमेरिका महाद्वीप में बोलीविया के ला पाज और एल ऑल्टो शहरों को जोडने़ वाला दुनिया का सबसे बड़ा अर्बन रोपवे है। इसमें कुल 10 लाइनें हैं और इसकी लंबाई 33.8 किलोमीटर है। 2014 में ये बनकर तैयार हुआ है। 18 हजार लोग हर घंटे इस रोपवे से सफर कर सकते हैं।

मेरिडा केबल कार : ये रोपवे वेनेजुएला में है। इस रोपवे से आप मेरिडा शहर से पिको एस्पेजो तक सफर कर सकते हैं। ये 12.5 किलोमीटर लंबा है। इसकी उंचाई 4765 मीटर है। इस रोपवे के जरिए मेरिडा शहर से पिको एस्पेजो तक पहुंचने के लिए 2 घंटे लगते हैं। ये 1960 में बनकर तैयार हुआ था। 2008 में इसे मरम्मत के लिए बंद किया गया था और 2016 में इसे फिर से शुरू किया गया।

होन थॉम केबल कार : वियतनाम में स्थित ये रोपवे एन थोई स्टेशन से थॉम द्वीप तक जाता है। यह रोपवे समुद्र, आईलैंड का सुंदर नजारा प्रस्तुत करता है। ये रोपवे 7.9 किलोमीटर लंबा है। इस रोपवे के जरिए 3500 लोग हर घंटे में सफर करते हैं।

तियानमेन केबल कार : ये रोपवे चीन में स्थित है। इसमें 98 कैबिन हैं और इसकी कुल लंबाई 7.4 किलोमीटर है। इसकी ऊंचाई 1277 मीटर ऊंची है। इसमें एक हजार लोग एक घंटे में सफर कर सकते हैं। ये केबल कार सिटी गार्डन से शुरू होकर झांगजियाजी रेलवे स्टेशन से होते हुए पहाड़ तक पहुंचती है।

फानसीपन केबल कार : ये केबल कार वियतनाम में है। इसकी लंबाई 6.3 किलोमीटर है। 6,292.5 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। 2000 हजार लोग एक घंटे में इस केबल कार के जरिए सफर कर सकते हैं। ये 2013 में बनकर तैयार हुआ है।

चिकामोचा केबल कार : ये केबल कार चिकामोचा नेशनल पार्क, सेंटेंडर, कोलंबिया में स्थित है। इसकी लंबाई 6.3 किलोमीटर है। ये 2 हजार मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। 500 लोग हर घंटे इसमें सफर कर सकते हैं।

बाना हिल्स : इस केबल कार को पहली बार 2013 में खोला गया था। ये वियतनाम में स्थित है। इसकी लंबाई 5.8 किलोमीटर है। इस केबल कार के जरिए हजारों लोग एक घंटे में सफर कर सकते हैं। बाना हिल्स रोपवे ट्रैंग सोन पर्वत में, दानंग से लगभग 30 किमी दूर है। ये एक हॉलीडे डेस्टिनेशन है।

ततेव रोपवे : ततेव रोपवे हलीदजोर और तातेव मठ के बीच स्थित है। ये अर्मेनिया का प्रसिद्ध रोपवे है। इसकी लंबाई 5.75 किमी है। यह केवल एक सेक्शन में बनाया गया सबसे लंबा रिवर्सिबल एरियल ट्रामवे है। 2010 में इसका निर्माण हुआ था।

नॉन्ग पिंग 360 रोपवे : हांगकांग के लांताऊ द्वीप पर नॉन्ग पिंग रोपवे स्थित है। ये एक बाइकेबल गोंडोला लिफ्ट है। ये हांगकांग के मशहूर पर्यटन स्थलों में से एक है। ये रोपवे, लांताऊ के उत्तरी तट पर स्थित तुंग चुंग को नॉन्ग पिंग क्षेत्र की पहाडियों़ से जोड़ता है। इसकी लंबाई 5.7 किलोमीटर है। 35 सौ लोग हर घंटे इसमें सफर कर सकते हैं। इसे 2006 में लोगों के लिए खोला गया था।

ड्रेगन डोल रोपवे : जापान का सबसे लंबा रोपवे है। इसमें एक तरफ की सवारी में लगभग 25 मिनट लगते हैं। इसकी लंबाई 5.5 किलोमीटर है। 2 हजार लोग इसमें एक घंटे में सफर कर सकते हैं। ये 1300 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है।◆◆◆

देव भूमि पर कब्जे की राक्षसी लालसा!

- युवराज पल्लव

बृहस्पति आगम में एक श्लोक है, **हिमालयं समारभ्य यावत् इन्दु सरोवरम्, तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते।** जो स्पष्ट कहता है कि हिमालय से प्रारंभ होकर इन्दु सरोवर (हिन्द महासागर) तक यह देव निर्मित देश हिन्दुस्थान कहलाता है। इसके अतिरिक्त विष्णु पुराण में इसी भरत भूमि पर जन्म लेने को लालायित देवतागण भी इसका यशोगान करते नहीं अघाते। श्लोक है, गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारत भूमिभागे, स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात।

इतनी महत्पूर्ण, पुण्यभूमि होने के कारण यह सदैव असुरों की भी प्रिय भूमि रही है। इसकी प्रमाणिकता पुराणों से मिलती है। युग बदला, समय बदला; लेकिन, असुर प्रवृत्ति के लोगों की इस देव भूमि को कब्जाने की लालसा कभी शांत नहीं हुई। आधुनिक युग में भी यही प्रवृत्ति नए स्वरुप में हमें दिखाई दे रही है। रामायण में प्रसंग आया है कि असुर, राक्षस मिल कर मनुष्यों के ईश्वर कार्यों (पूजा पाठ, हवन यज्ञ आदि) को किस प्रकार दूषित, खंडित किया करते थे। किस प्रकार राक्षस पवित्र जल, देवस्थान, हवन कुंड, पवित्र प्रसाद में रक्त, मांस, मदिरा और हड्डियां मिला दिया करते थे। किस प्रकार धार्मिक मनुष्यों को प्रताड़ित किया करते थे। तब भगवान राम और लक्ष्मण को गुरु विश्वामित्र अपने साथ धर्मनिष्ठ मनुष्यों की रक्षा के लिए वन ले गए। ऐसा कुछ आज भी असुर प्रवृत्ति के मजहबी लोगों द्वारा किया जा रहा है। कहीं भोजन में गौ मांस मिलाया जा रहा है। कहीं पवित्र नदियों के किनारे पशु काटे जा रहे हैं, जिससे उन मृत पशुओं का रक्त नदियों के पवित्र जल में मिल रहा है। कहीं मंदिर में भगवान के पवित्र प्रसाद में मृत पशुओं की चर्बी मिलाई जा रही है।

इसी क्रम में कहीं पूरे के पूरे देवस्थानों की भूमि पर वक्फ की सम्पत्ति होने का दावा ठोका जा रहा है। आज भी दुनियाभर के लोगों के लिए भारत आध्यात्मिक शांति के लिए एकमात्र साधना स्थल है। जिस पर कब्जा करने का सपना सदियों से विदेशी शक्तियों का रहा है। ये वो शक्तियों हैं जिन्होंने बड़ी-बड़ी प्राचीन सभ्यताओं को नष्ट कर उसके भस्मावशेषों पर अपनी सभ्यता के भवन खड़े किए हैं। मजहबी लोग भारत के खिलाफ गज़वा-ए-हिंद के अपने लक्ष्य में लगे हुए हैं और उसके निमित्त जिहाद के भिन्न-भिन्न स्वरुप हमें दिखाई देते है। इसी में से एक है ज़मीन जिहाद। इसी से जुड़ा है पवित्र भूमि जिहाद। जहां ज़मीन जिहाद में भारत में किसी भी ज़मीन पर मस्जिद- मजार बना कर उस पर वक्फ के माध्यम से जिहादी कब्ज़ा कर लिया जाता है। वहीं पवित्र भूमि जिहाद के तहत साजिश और रणनीति बनाकर भारत के पवित्र धार्मिक स्थलों के आसपास मस्जिदों, मज़ारों का निर्माण करके देव भूमि पर अपना प्रभुत्व बनाने का प्रयास किया जा रहा है। यह प्रयास सालों से किया जा रहा है। कहीं हिन्दू मुस्लिम सौहार्द बढ़ाने के नाम पर मंदिरों के बराबर में मस्जिद-मजार बनाई गई हैं, तो कहीं उनके ठीक सामने। अब प्रश्न यह है ऐसा क्यों किया जा रहा है? प्रतीत होता है, ऐसा इसलिए किया जा रहा है ताकि सनातन की प्रभावशाली और प्राचीन संस्कृति और सभ्यता पर इस्लाम का दावा किया जा सके। दूसरों की संस्कृतिक और धार्मिक विरासत पर दावा करना इस्लामी इतिहास रहा है। इससे यह अपने को अधिक प्राचीन सिद्ध कर अपनी प्रमाणिकता, वरिष्ठता और मानव सभ्यता में अधिक अनुभवी होने का दावा करना चाहता है। ऐसा यह यहूदी और ईसाई मजहब के धार्मिक चरित्रों के साथ भी कर चुका है। आज जब हिन्दुओं में जागृति आ रही है, अवैध और साजिश बनाई मस्जिदों का विरोध सामने आ रहा है। इसके साथ ही सामने आ रही हैं वो करतूतें जो विधर्मियों द्वारा की जाती हैं। हिमाचल प्रदेश से ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जहां महिलाओं ने बताया है; कि कैसे मस्जिदों में शौच करने वाले पुरुष उन्हें देख कर लुंगी उठा देते थे, कि कैसे वे दरवाजा खुला रख कर शौच करते थे। विरोध करने पर उन महिलाओं और उनके परिवार वालों को धमकाया जाता था। बाजारों में कैसे हिन्दू दुकानदारों से जानबूझ कर विवाद किया जाता है ताकि त्रस्त होकर ऐसे लोग स्वयं ही मकान- दुकान बेच कर चले जाएँ।

यह ऐसी रणनीति है जिसमें हिन्दू मुस्लिम विवाद भी नहीं होता और परिणाम उनके अनुकूल आ जाता है। ऐसे मामलों को बड़ी आसानी से असामाजिक तत्वों या व्यक्तिगत विवाद की संज्ञा दे दी जाती है। अब संतोष की बात यह है कि अधिकतर हिन्दुओं को यह समझ आ गया है; कि सभी धर्म समान हैं का ढोल कितना खोखला है। हिन्दू मुस्लिम भाई चारे के नाम पर ईमान वाले लोग कैसे हिन्दुओं को चारा बना रहे हैं कि कैसे सेक्युलरिज्म और हिन्दू-मुस्लिम सौहार्द के नाम पर इस्लाम और जिहाद को बढ़ावा दे कर हिन्दुत्व को समाप्त किया जा रहा है। पहाड़ पर हिन्दुत्व के समर्थन में संगठित हिन्दुओं के जनान्दोलन, शेष हिन्दुओं के लिए प्रेरणा का काम कर रहे हैं। जो लोग कहते थे कि पहाड़ की जवानी उसके काम नहीं आती, वे यह मानने को मज़बूर हैं कि यह जवानी संगठित हो कर, हिन्दुत्व की एक नई कहानी लिख रही है। वास्तव में देव भूमि को बचाने के लिए राजनीतिक दलों को एकमत होकर जनता का साथ देना चाहिए ताकि पहाड़ों की पवित्रता, संस्कृतिक और पहचान कायम रह सके। क्योंकि संविधान सेक्युलरिज्म के नाम पर देश की प्राचीन संस्कृति-सभ्यता को मिटा डालने की आज़ादी नहीं देता, लेकिन अपनी संस्कृति का संरक्षण करना हमारा मूलभूत कर्त्तव्य अवश्य बताता है।◆◆◆

जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक खेती

लोकेश भनोट, कृषि विश्लेषक

जलवायु परिवर्तन के गंभीर प्रभावों के कारण पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ लंबे समय तक टिकाऊ नहीं रह सकतीं। प्राकृतिक खेती न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देती है बल्कि किसानों को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाती है। कृषि वैज्ञानिकों ने चेताया है कि यदि खेती में बदलाव नहीं किया गया तो अगले 60 वर्षों में दुनिया के अधिकांश हिस्सों में खेती असंभव हो जाएगी।

कृषि और पर्यावरण का गहरा संबंध है। यह न केवल 70 प्रतिशत जनसंख्या को रोजगार देता है बल्कि देश की अर्थव्यवस्था में 17 प्रतिशत का योगदान करता है। परंतु जलवायु परिवर्तन ने इस क्षेत्र को गंभीर चुनौती दी है। फसल चक्र प्रभावित हो रहा है, सिंचाई संसाधन सिकुड़ रहे हैं, और रसायनों का अत्यधिक उपयोग मिट्टी की उर्वरता को नष्ट कर रहा है। परिणामस्वरूप, किसानों का शहरी पलायन बढ़ रहा है। इन समस्याओं का समाधान प्राकृतिक खेती के रूप में सामने आ रहा है, जो पर्यावरण के साथ सामंजस्य बनाते हुए कम लागत में बेहतर उत्पादन देने में सहायक है।

जलवायु परिवर्तन के कृषि पर प्रभाव

ग्लोबल क्लाइमेट रिस्क इंडेक्स 2021 के अनुसार, भारत जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित देशों में शामिल है। मौसम में बदलाव, जैसे सूखा, अनियमित बारिश और बढ़ता तापमान, कृषि उत्पादन को सीधे प्रभावित कर रहे हैं। रिपोर्टों के अनुसार, 2010-2039 के बीच जलवायु परिवर्तन से भारत के कृषि उत्पादन में 4.5 से 9 प्रतिशत तक की गिरावट हो सकती है। हिमाचल प्रदेश में बागवानी, खासकर सेब उत्पादन, पर इसका गहरा असर पड़ा है। 2023 में सेब का उत्पादन 50 प्रतिशत तक घट गया, जिससे बागवानों को भारी आर्थिक नुकसान हुआ।

प्राकृतिक खेती का महत्व

प्राकृतिक खेती पारंपरिक भारतीय खेती का एक आधुनिक रूप है, जिसमें रसायनों के बजाय देसी गाय के गोबर-मूत्र, स्थानीय वनस्पतियों और देसी केंचुए का उपयोग होता है। यह विधि मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखते हुए जैविक कार्बन को वातावरण में मुक्त होने से रोकती है। इसके तहत मिश्रित खेती और कम पानी की खपत जैसे उपाय शामिल हैं, जो जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले सूखे और अतिवृष्टि जैसी समस्याओं से निपटने में मददगार हैं।

हिमाचल प्रदेश में कई किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाया है। इससे उनकी लागत घटी है और उत्पादन की गुणवत्ता बढ़ी है। प्राकृतिक कीटनाशकों और स्थानीय संसाधनों का उपयोग किसानों की बाजार पर निर्भरता को कम करता है।

पोषण सुरक्षा में प्राकृतिक खेती का योगदान

जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि को प्रभावित कर रहा है बल्कि स्वास्थ्य और पोषण पर भी प्रभाव डाल रहा है। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे-5 (2019-21) के अनुसार, हिमाचल प्रदेश के 10 जिलों में कुपोषण की दर बढ़ रही है। प्राकृतिक खेती पोषणयुक्त फल और सब्जियों की उपलब्धता बढ़ाकर इस समस्या का समाधान प्रदान कर सकती है। राज्य सरकार ने प्राकृतिक खेती के उत्पादों को उपभोक्ताओं तक पहुँचाने के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं।

राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर प्रयास

गुजरात, आंध्र प्रदेश और उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों ने प्राकृतिक खेती को अपनाना शुरू कर दिया है। केंद्र सरकार ने 'नेशनल मिशन ऑन नेचुरल फार्मिंग' के तहत किसानों को संगठित कर प्राकृतिक खेती आधारित क्लस्टर बनाने का कार्य शुरू किया है। गंगा किनारे 5 लाख हेक्टेयर भूमि को सतत् खेती में बदलने की योजना पर भी काम हो रहा है। हिमाचल प्रदेश में इस दिशा में सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं।◆◆◆

बंटना नहीं कटना नहीं

बंटना नहीं कटना नहीं, नहीं होगी गुलामी।
बंट जाएंगे कट जाएंगे, फिर होगी गुलामी।
सब एक रहेंगे तभी नेक रहेंगे,
गर लड़ते रहेंगे, फिर कटते रहेंगे।
भारत है भारतीयों का यह बंट न सकेगा
जो टुकड़े हो चुके हैं वो भी लौट आएंगे।
उनकी चली तो जायदाद बांट जाएंगे।
तुमने कमाया जो भी, उसे चाट खाएंगे।
चालें हैं शातिराना तुम्हें बांट खाने की
अब झांसे में न आना तुम्हें कसम राम की।
वह मुफ्तखोरी में तुम्हें उलझाते रहेंगे।
बढने़ न पाए देश, खजाना लुटाएंगे ।
खुद ऐश करेंगे तुम्हें बर्बाद करेंगे।
उनकी चाल में न आना हर बार कहेंगे।
मां भारती की लाज भी तुमको बचानी है
मां भारती का ताज भी तुमको सजाना है।
भगवा ध्वज ले हाथ में यह गीत गाना है
अब कटना नहीं बंटना नहीं नेक नारा है।।

डा कर्म सिंह

भेड़ की खाल में हर तरफ हैं भेडिये

आजकल जिधर भी नजऱ दौड़ाओ
कंस और रावण ही नजऱ आते हैं
लोग भी रावण को जलाते हैं हर बार
न जाने क्यों कंस को भूल जाते हैं
कंस के रावण से कहीं ज़्यादा थे अत्याचार
अपनी बहन की संतानों को मारा था बार बार
रावण बहुत विद्वान् था लेकिन मति गई थी मारी
प्रभु श्रीराम के हाथों होना जो था उद्धार
कैसे पहचाने किसी को चेहरा देखकर
मुखौटे चेहरे पर लगा रखे हैं हज़ार
बाहर के लोगों से तो बचाना है बहुत ही कठिन
कैसे बचेगी आन जब घर के लोग ही करेंगे इज़्ज़त तार तार
उम्र का भी नहीं लिहाज़ न छोटा देखते न बड़ा
क्या हो गया इंसान को करता कुछ है कुछ और है कहता
जब भाई ने बहिन की इज़्ज़त से किया खिलवाड़
सोचिये कहां जा रहा ज़माना जो डर के था रहता

रवींद्र कुमार शर्मा, घुमारवीं जिला बिलासपुर हि प्र

सूरज और दीया

सदियों से खुद को जलाकर
सूरज ने हमें रौशनी दी है।
तभी तो हर पल हर दिन
पूजा इसकी होती है।
इन दीयों ने भी शायद
सीख सूरज से ही ली है
घने अन्धेरे को मिटाकर
हर तरफ रोशनी की है।
जरा अदब से उठाना
इन बुझे हुए दीयों को
रात अन्धेरी जिन्होंने
रौशनी से जगमग की है।
दूसरों को जलाकर खुशियों
मनाना फितरत जिनकी है
इन दीयों से ही सीखो
क्या सीख इन्होंने दी है।
हर पर्व इन्हीं से रोशन खूब तकदीर इनकी है
खुद को जलाकर इन्होंने नसीहत गहरी दी है–
मिसाल सूरज दीयों सी कोई दूसरी नहीं है।
जो काम आए औरों के 'विग' जीवन सफल वही है।

– मुकेश विग ठोडो ग्रांउड मोड़ सोलन

ऋतु के अनुसार भोजन के पारंपरिक नियम

भारतीय आयुर्वेद के शास्त्रों में ऋतु के अनुसार भोजन किए जाने का नियम है। किस ऋतु में कौन सा भोजन खाया जाना चाहिए, यह ज्ञान परंपरा भारत में सदियों से प्रचलित रही है। जिसमें प्रत्येक ऋतु एवं मास के अनुसार अन्न एवं अन्य खाद्य पदार्थों का सेवन किया जाना चाहिए। यह वैज्ञानिक परंपरा स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी रही है। वर्तमान में भजन का ऋतु के अनुसार ग्रहण न किए जाने के कारण मनुष्य के स्वास्थ्य में गिरावट आई है। इसलिए भोजन का ऋतु अनुसार ज्ञान होना आवश्यक है ताकि बिगड़ते स्वास्थ्य की देखभाल सुनिश्चित की जा सके। आज भी इसकी आवश्यकता है। आहार के नियम भारतीय 12 महीनों के अनुसार इस प्रकार है–

चैत्र (मार्च-अप्रैल) – इस महीने में चने का सेवन करे क्योकि चना आपके रक्त संचार और रक्त को शुद्ध करता है एवं कई बीमारियों से भी बचाता है। चैत्र के महीने में नित्य नीम की 4 – 5 कोमल पतियों का उपयोग भी करना चाहिए इससे आप इस महीने के सभी दोषों से बच सकते है। नीम की पतियों को चबाने से शरीर में स्थित दोष शरीर से हटते है।

वैशाख (अप्रैल – मई)– वैशाख महीने में गर्मी की शुरुआत हो जाती है। बेल का इस्तेमाल इस महीने में अवश्य करना चाहिए जो आपको स्वस्थ रखेगा। वैशाख के महीने में तेल का उपयोग बिल्कुल न करे क्योकि इससे आपका शरीर अस्वस्थ हो सकता है।

ज्येष्ठ (मई-जून) – भारत में इस महीने में सबसे अधिक गर्मी होती है। ज्येष्ठ के महीने में दोपहर में सोना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है, ठंडी छाछ, लस्सी, जूस और अधिक से अधिक पानी का सेवन करें। बासी खाना, गरिष्ठ भोजन एवं गर्म चीजों का सेवन न करें। इनके प्रयोग से आपका शरीर रोग ग्रस्त हो सकता है।

अषाढ़ (जून-जुलाई) – आषाढ़ के महीने में आम , पुराने गेंहू, सत्तु , जौ, भात, खीर, ठन्डे पदार्थ , ककड़ी, पलवल, करेला आदि का उपयोग करे व आषाढ़ के महीने में भी गर्म प्रकृति की चीजों का प्रयोग करना आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है।

श्रावण (जूलाई-अगस्त) – श्रावण के महीने में हरड का इस्तेमाल करना चाहिए। श्रावण में हरी सब्जियों का त्याग करे एव दूध का इस्तेमाल भी कम करे। भोजन की मात्रा भी कम ले – पुराने चावल, पुराने गेंहू, खिचड़ी, दही एवं हलके सुपाज्य भोजन को अपनाएं।

भाद्रपद (अगस्त-सितम्बर) – इस महीने में हलके सुपा%य भोजन का इस्तेमाल कर वर्षा का मौसम होने के कारण आपकी जठराग्नि भी मंद होती है इसलिए भोजन सुपाज्य ग्रहण करे।

आश्विन (सितम्बर-अक्टूबर) – इस महीने में दूध, घी, गुड़, नारियल, मुन्नका, गोभी आदि का सेवन कर सकते है। ये गरिष्ठ भोजन है लेकिन फिर भी इस महीने में पच जाते है क्योकि इस महीने में हमारी जठराग्नि तेज होती है।

कार्तिक (अक्टूबर-नवम्बर) – कार्तिक महीने में गरम दूध, गुड, घी, शक्कर, मूली आदि का उपयोग करें। ठंडे पेय पदार्थो का प्रयोग छोड़ दे। छाछ, लस्सी, ठंडा दही, ठंडा फ्रूट %यूस आदि का सेवन न करे , इनसे आपके स्वास्थ्य को हानि हो सकती है।

अगहन (नवम्बर-दिसम्बर) – इस महीने में ठंडी और अधिक गरम वस्तुओं का प्रयोग न करे।

पौष (दिसम्बर-जनवरी) – इस ऋतू में दूध, खोया एवं खोये से बने पदार्थ, गौंद के लाडू, गुड़, तिल, घी, आलू, आंवला आदि का प्रयोग करे, ये पदार्थ आपके शरीर को स्वास्थ्य देंगे। ठन्डे पदार्थ, पुराना अन्न, मोठ, कटु और रुक्ष भोजन का उपयोग न करे।

माघ (जनवरी-फ़रवरी) – इस महीने में भी आप गरम और गरिष्ठ भोजन का इस्तेमाल कर सकते है। घी, नए अन्न, गौंद के लड्डू आदि का प्रयोग कर सकते है।

फाल्गुन (फरवरी-मार्च) – इस महीने में गुड़ का उपयोग करे। सुबह के समय योग एवं स्नान का नियम बना ले। चने का उपयोग न करें।

यदि उक्त अनुसार पारंपरिक ज्ञान को अपनाते हुए ऋतु के अनुसार भोजन किया जाए तो स्वास्थ्य की अ%छी तरह से देखभाल की जा सकती है।◆◆◆

ट्रंप की ऐतिहासिक वापसी

अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति निर्वाचित

132 साल में पहले नेता जो चुनाव हारकर फिर लौटे

चार साल पहले मिली हार के बाद ऐतिहासिक वापसी करते हुए डोनाल्ड जे ट्रंप फिर अमेरिका के राष्ट्रपति चुन लिए गए। व्हाइट हाउस पर कब्जे के मुकाबले में उन्होंने डेमोक्रेटिक पार्टी की प्रत्याशी, उपराष्ट्रपति कमला हैरिस को हराया। ट्रंप (78) ने मतों की गिनती की शुरुआत से ही हैरिस पर प्रभावी बढ़त बना ली थी और यह बढ़त राष्ट्रपति बनने के लिए जरूरी 270 इलेक्टोरल वोट हासिल करने तक कायम रही।

अमेरिकी मीडिया में लगातार चल रहे कांटे के मुकाबले का अनुमान मतगणना के दौरान सिर्फ स्विंग राज्यों में दिखा। जहां अंतिम क्षण तक कमला ने ट्रंप को टक्कर दी, लेकिन जीत नहीं दर्ज कर पाईं। स्विंग वाले सातों राज्य ट्रंप के खाते में गए। इनमें से नॉर्थ कैरोलिना को छोड़ अन्य सभी छह राज्यों में पिछली बार ट्रंप हारे थे। स्विंग राज्य विस्कोंसिन में मिली जीत ने उन्हें जादुई आंकड़े से ऊपर पहुंचा दिया। खास बात यह है कि इस बार अमेरिका पर ट्रंप की पकड़ अधिक मजबूत होगी क्योंकि चार साल बाद सीनेट में रिपब्लिकन पार्टी ने पूर्ण बहुमत हासिल कर लिया है। प्रतिनिधि सभा में भी उसका बहुमत बने रहने की उम्मीद है। प्रतिनिधि सभा में बहुमत के लिए जरूरी 218 सीटों के मुकाबले रिपब्लिकन पार्टी 200 सीटें जीत चुकी है। 20 सीटों पर उसके प्रत्याशी आगे चल रहे हैं। दोनों सदनों में बहुमत का अर्थ है कि ट्रंप को अपने फैसले लागू करने में अवरोध का सामना नहीं करना होगा।

पहला संदेश...दुनिया में अब कोई युद्ध नहीं होगा : जीत सुनिश्चित होने के बाद डोनाल्ड ट्रंप ने अपने समर्थकों को संबोधित करते हुए कहा कि मैं अमेरिका को फिर से महान बनाऊंगा। हमें अभूतपूर्व और ताकतवर जनादेश मिला है। मैं दुनिया में चल रहे युद्धों को खत्म करने पर ध्यान केंद्रित करूंगा। मेरे कार्यकाल में अब कोई युद्ध नहीं होगा। नए

उपराष्ट्रपति जेडी वेंस का भारत से है रिश्ता

ट्रंप के रनिंग मेट यानी उपराष्ट्रपति के रूप में जेडी बेंस का चुना जाना भी भारत के लिए अच्छी खबर है। वेंस की पत्नी उषा भारतीय मूल की हैं, उनका पैतृक घर आंध्र प्रदेश में है। दोनों की मुलाकात येल लॉ स्कूल में हुई थी।

प्रतिनिधि सभा के लिए चुने छह भारतीय : इस बार अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में भारतीय बढ़ गए हैं। पिछली बार के पांच प्रतिनिधि एमी बेरा; राजा कृष्णमूर्ति, रो खन्ना, प्रमिला जयपाल व श्री थानेदार ने फिर जीत दर्ज की। इस बार सुहास सुब्रमण्यम वजीनिया से जीते हैं। सुहास बराक ओबामा के व्हाइट हाउस सलाहकार रह चुके हैं।

ट्रंप ने ऐरिजोना समेत सातों प्रमुख राज्यों में जीत दर्ज कर रचा इतिहास : अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एरिजोना में जीत के साथ ही सातों प्रमुख राज्यों में डेमोक्रेट प्रतिद्वंद्वी कमला हैरिस को हराकर इतिहास रच दिया है। ◆◆◆

वीर बाल दिवस

वीर बाल दिवस भारत में 26 दिसंबर को मनाया जाता है। यह दिन उन महान बलिदानों को याद करने का दिन है जो बलिदान सिख धर्म के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी के छोटे पुत्रों, साहिबजादे जोरावर सिंह जी और फतेह सिंह जी ने देश, धर्म, और अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए किए थे। इन बाल वीरों की शहादत हमारे इतिहास का एक प्रेरणादायक अध्याय है, जिसमें उनकी निडरता और अटूट आस्था का अद्वितीय उदाहरण मिलता है।

1704 में मुगलों के अत्याचारों का विरोध करने और धर्म की रक्षा करने के लिए गुरु गोबिंद सिंह जी और उनके परिवार ने कई बलिदान दिए। साहिबजादे जोरावर सिंह जी और फतेह सिंह जी, जो क्रमशः मात्र 9 और 6 वर्ष के थे, को सरहिंद के तत्कालीन शासक, वजीर खान द्वारा बंदी बना लिया गया। उन्हें इस्लाम धर्म अपनाने के लिए विवश किया गया, लेकिन उन्होंने निडरता के साथ अपने धर्म, आस्था और आदर्शों का पालन किया और कोई समझौता नहीं किया। उनकी दृढ़ता और साहस से क्रोधित होकर वजीर खान ने उन्हें जीवित ही दीवार में चुनवा देने का कठोर आदेश दिया। इतनी कम उम्र में अपनी शहादत देने वाले इन बाल वीरों ने साहस, आस्था और आत्म-सम्मान का जो उदाहरण पेश किया, वह आज भी हमें प्रेरणा देता है। उनकी शहादत हमें यह सिखाती है कि धर्म, संस्कृति, और सच्चाई के प्रति अडिग रहना चाहिए, चाहे कितनी भी कठिनाई क्यों न आए। भारत सरकार ने 2022 में वीर बाल दिवस को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने की घोषणा की। इस दिन को मनाने का उद्देश्य बच्चों को साहिबजादों की वीरता, निडरता और त्याग की गाथा से अवगत कराना है। इसके माध्यम से बच्चों को अपने धर्म, संस्कृति और मूल्यों के प्रति प्रेरित किया जाता है। वीर बाल दिवस साहिबजादों के बलिदान की याद में न केवल सिख समुदाय बल्कि पूरे भारतवर्ष के लिए एक आदर्श का प्रतीक है। यह हमें यह याद दिलाता है कि सच्चाई के मार्ग पर चलने के लिए हमें सदैव निडर और अडिग रहना चाहिए।◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

1. भारत का राष्ट्रीय वृक्ष कौन है ? (क) पीपल (ख) बरगद (ग) देवदार
2. भारत का राष्ट्र प्रमुख कौन है ? (क) राष्ट्रपति (ख) प्रधान मंत्री (ग) गृह मंत्री
3. अयोध्या किस नदी के पट पर स्थित है ? (क) गोमती (ख) सरयू (ग) नर्मदा
4. सर्वप्रथम किस देवता की पूजा होती है? (क) गणेश जी (ख) ब्रह्म जी (ग) विष्णु जी
5. भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे? (क) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (ख) महात्मा गांधी (ग) जवाहर लाल नेहरू
6. विवेकानन्द जी का बचपन का क्या नाम था ? (क) धर्मेन्द्र (ख) नरेन्द्र (ग) सुरेन्द्र
7. स्वर्ण मन्दिर किस स्थान पर स्थित है? (क) अमृतसर (ख) जालंधर (ग) लुधियाना
8. कौन सी नदी दक्षिण गंगा नाम से प्रसिद्ध है ? (क) गोदावरी (ख) कृष्णा (ग) गंगा
9. स्वतंत्रता दिवस कब मनाया जाता है? (क) 15 अगस्त (ख) 26 जनवरी (ग) 2 अक्तूबर
10. किस ग्रह को लाल ग्रह के नाम से जाना जाता है? (क) मंगल (ख) शुक्र (ग) बुध

विगत मास मातृवंदना अंक के बाल जगत में असावधानीवश प्रश्नोत्तरी के उत्तर अक्तूबर मास के ही मुद्रित हुए थे, क्षमा करें। इस अंक में उन्हीं प्रश्नों के सही उत्तर दिए जा रहे हैं।

उत्तर : 1. (ख-बरगद) 2. (क-राष्ट्रपति) 3. (ख -सरयू) 4. (क-गणेश जी) 5. (क-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद) 6. (ख-नरेन्द्र) 7. (क-अमृतसर) 8. (क-गोदावरी) 9. (क-15 अगस्त) 10 (ख -अरब सागर)

चुटकुले

गोलू: किताब का वजन क्यों नहीं बढ़ता?
मोलू: क्योंकि उसके अंदर सिर्फ अक्षर होते हैं, वजन नहीं!

◆◆◆

पिंकी : तुम रोज सुबह जल्दी क्यों उठते हो?
चिंकी: क्योंकि मेरी आँखें बंद रहकर थक जाती हैं!

◆◆◆

सोनू : क्या तुम जानते हो, पानी क्यों नहीं खाता? **मोनू:** क्यों? **सोनू:** क्योंकि पानी पीने वाला होता है, खाने वाला नहीं!

◆◆◆

टीचर: अगर तुम्हें 1 करोड़ मिल जाए, तो सबसे पहले क्या करोगे? **बच्चा:** मैम, सबसे पहले मैं गणित की किताब बंद कर दूंगा!

◆◆◆

पप्पू : तुम्हारा नाम क्या है? **गप्पू:** मेरा नाम है गप्पू।
पप्पू: अरे वाह! नाम तो ऐसा है कि सुनते ही लगता है कुछ गप्पें मारने वाले हो!

कार्यालय
मातृवन्दना (मासिक)
डा. हेडगेवार भवन, द्वितीय तल नाभा हाउस,
शिमला–171004, हिमाचल प्रदेश
दूरभाष : 0177-2836990,
मोबाइल : 7650000990

सेवा में

मातृवन्दना
प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेस – 9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित।

follow us on :